कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 17 से 23 मार्च 2026 ● वर्ष-26 ● अंक-43 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

14 लाख हेक्टेयर में बोयी जायेंगी जायद फसलें

सबसे अधिक 11 लाख हेक्टेयर में मूंग बोने की तैयारी

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में तीसरी फसल के रूप में बोयी जाने वाली जायद फसलों की तैयारी शुरू हो गई है। इस साल प्रदेश भर में 14.48 लाख हेक्टेयर में ग्रीष्मकालीन फसलें बोने का लक्ष्य रखा गया है। सबसे अधिक 11.29 लाख हेक्टेयर में मूंग बोयी जायेगी। 3 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उड़द, मक्का, मूंगफली एवं धान की बुवाई प्रस्तावित है।

कृषि संचालनालय भोपाल से प्राप्त जानकारी के अनुसार उड़द की बुवाई 1.75 लाख हेक्टेयर में की जायेगी। मक्का 19 हजार हेक्टेयर एवं मूंगफली 30 हजार हेक्टेयर में बोये जाने का लक्ष्य रखा गया है। ग्रीष्मकालीन धान की बुवाई 46 हजार हेक्टेयर में प्रस्तावित है। प्रदेश के जिन क्षेत्रों में गेहूं एवं चना, मसूर की कटाई शुरू हो गई है।

प्रमुख जायद फसलों का बुवाई लक्ष्य एवं एमएसपी

फसल	बुवाई लक्ष्य 2026	एम.एस.पी. 2025-26
मूंग	11,29631	8768
उड़द	1,75455	7800
मक्का	19294	--
मूंगफली	30458	7263
धान	46010	2369
कुल योग	1400848	

(इकाई- क्षेत्र हजार हेक्टे. में, भाव- रुपये/क्विं.)

वहां किसानों ने जायद मूंग की बुवाई शुरू कर दिया है। धान उत्पादक क्षेत्रों में यह बुवाई अप्रैल प्रथम सप्ताह से शुरू होगी। उल्लेखनीय है कि जायद फसलों की बुवाई सबसे अधिक नर्मदापुरम, हरदा, सीहोर, देवास जिलों में की जाती है। इसके अलावा 20 अन्य जिलों में भी जायद फसलें बोयी जाती हैं।

मूंग में किसानों की दिलचस्पी अधिक: राज्य सरकार के अनेक प्रोत्साहन एवं समझाईश के बावजूद भी किसान जायद में मूंग की खेती करने पर अड़े हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार पिछले साल की तुलना में इस साल भी मूंग का रकबा यथावत 11 लाख हेक्टेयर के आसपास रहने की संभावना है। उड़द का रकबा मात्र 25 से 50 हजार हेक्टेयर तक बढ़ सकता है। किसानों का कहना है कि मूंग की फसल 60 से 70 दिन में तैयार हो जाती है जबकि उड़द को पकने में 80 से 90 दिन लगते हैं। ज्यादा अवधि उड़द में लगने से खरीफ फसलों की बुवाई में विलंब हो सकता है। साथ ही 15 से 20 जून के आसपास मानसून आने से फसल की कटाई-गहाई में भी परेशानी आती है। राज्य सरकार ने इस वर्ष उड़द फसल को प्रोत्साहित करने के लिये 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस देने का एलान किया है। समर्थन मूल्य पर उड़द खरीदी के लिए पंजीयन प्रक्रिया भी जारी है जबकि मूंग की सरकारी खरीदी अभी तक स्पष्ट नहीं हैं। बोनस सहित मिलाकर उड़द 8400 रुपए क्विंटल खरीदी जायेगी, जबकि मूंग का एम.एस.पी. वर्ष 2025-26 के लिए 8768 रुपए क्विंटल घोषित किया गया है।

एमएसपी पर गेहूं खरीदी अब एक अप्रैल से

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। राज्य शासन ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदे जाने वाले गेहूं की तारीख में परिवर्तन किया है। 16 मार्च से शुरू होने वाली गेहूं खरीदी अब 1 अप्रैल से की जाएगी। भोपाल, नर्मदापुरम, उज्जैन एवं इंदौर संभागों में खरीदी 1 अप्रैल से एवं शेष संभागों में 7 अप्रैल से की जायेगी। गेहूं खरीदी सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 8 बजे से सायं 8 बजे तक शासकीय अवकाश के दिन छोड़कर की जायेगी। इस संबंध में म.प्र. खाद्य नागरिक आपूर्ति निगम ने सभी जिला कलेक्टर्स को आदेश भेजा है। स्मरणीय है कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 के लिए बोनस सहित गेहूं की खरीदी 2625 रुपए प्रति क्विंटल से की जायेगी।

कृषि के हर चरण में महिलाओं की अहम भूमिका : श्रीमती मुर्मू

कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं पर वैश्विक सम्मेलन

नई दिल्ली। नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद परिसर के हॉल में कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं पर वैश्विक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया, जबकि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान उद्घाटन सत्र में विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए।

आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट ने बताया कि इस सम्मेलन का उद्देश्य कृषि और खाद्य प्रणाली में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करना, उनके नेतृत्व को बढ़ावा देना और नीति स्तर पर लैंगिक समानता को आगे बढ़ाना है।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने कहा कि कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बीज बोने से लेकर फसल कटाई, प्रसंस्करण और बाजार तक हर चरण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि मछली पालन, मधुमक्खी पालन, पशुपालन और वन उत्पादों के उपयोग जैसे क्षेत्रों में भी महिलाएं सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2026 को 'महिला किसान का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया है। यह घोषणा कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और नेतृत्व की भूमिका को मजबूत करने के लिए वैश्विक स्तर पर सामूहिक प्रयासों का आह्वान करती है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारत में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि बीज बोने से लेकर फसल को बाजार तक पहुंचाने तक महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ट्रस्ट फॉर एडवांसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज के अध्यक्ष डॉ. आर.एस. परोदा ने कहा कि केवल प्रतिनिधित्व ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि महिलाओं को पूरी कृषि वैल्यू चेन में नेतृत्व की भूमिका निभानी होगी।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव घोषित

अप्रैल में वोटिंग 4 मई को आयेंगे नतीजे

नई दिल्ली। चार राज्यों और एक केन्द्र शासित क्षेत्र की 824 विधानसभा सीटों के लिए होने वाले विधानसभा चुनाव की तिथियां घोषित कर दी गई हैं। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बताया कि 9 से 29 अप्रैल के दौरान 21 दिन में मतदान होगा और सभी के एक साथ 4 मई को चुनाव परिणाम आयेंगे। पश्चिम बंगाल में 23, 29 अप्रैल, तमिलनाडु 23 अप्रैल, केरल, असम और पुडुचेरी में 9 अप्रैल को वोटिंग होगी। इन सभी राज्यों के वोटों की गिरती एवं परिणाम चार मई को घोषित किये जायेंगे। 17.4 करोड़ मतदाता 824 विधायकों के भाग्य का फैसला ईवीएम के माध्यम से करेंगे। सभी राज्यों में चुनाव आदर्श संहिता लागू हो गई है।

पीएम किसान सम्मान निधि की 22वीं किस्त जारी

19 हजार करोड़ रुपये पहुंचे किसानों के खाते में

गुवाहाटी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने असम के गुवाहाटी में आयोजित कार्यक्रम में किसानों के खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 22वीं किस्त अंतरित की। देश के 9.32 करोड़ किसानों के खाते में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सिंगल क्लिक के माध्यम से 18,640 करोड़ रुपये ट्रांसफर कर दिए हैं। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को साल में 6000 रुपये दिए जाते हैं। 2-2 हजार रुपये की 3 किस्तें साल में जारी की जाती है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा सम्मान निधि योजना देश के छोटे किसानों के लिए सामाजिक सुरक्षा का माध्यम बन गई है। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार के लिए किसानों के कल्याण से ज्यादा जरूरी कुछ भी नहीं है। पिछले 10 वर्ष में किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के रूप में रुपये 20 लाख करोड़ से ज़्यादा मिले हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 11 वर्ष में, मौजूदा सरकार ने देश के किसानों के चारों ओर मजबूत सुरक्षा कवच बुना है। श्री मोदी ने बताया कि चाहे वह एमएसपी हो, सस्ते ऋण हों, फसल बीमा हो, या पीएम किसान सम्मान निधि हो, ये योजनाएं किसानों के लिए बहुत बड़ा सहारा बन गई हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि सरकार ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि अंतर्राष्ट्रीय संकटों का असर खेती-बाड़ी और कृषि पर न पड़े।

भारत को बनायेंगे दुनिया का फूड बास्केट : श्री चौहान

कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति से भी तेज गति से आगे बढ़ रहा देश

नई दिल्ली। लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण व ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्पष्ट विजन है कि भारत केवल अपने नागरिकों की खाद्य सुरक्षा तक सीमित न रहे, बल्कि विश्व बंधु की भावना के साथ दुनिया की जरूरतों को भी पूरा करने वाला फूड बास्केट ऑफ द वर्ल्ड बने। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों में रिकॉर्ड उत्पादन, मजबूत भंडारण क्षमता और निर्यात की संभावनाओं ने भारत को वैश्विक स्तर पर एक भरोसेमंद आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित किया है और आने वाले समय में यह भूमिका और मजबूत होगी।

श्री चौहान ने बताया कि देश का कुल खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर लगभग 357 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है जिससे भारत की खाद्य सुरक्षा और किसानों की आय दोनों मजबूत हुई है। उन्होंने कहा कि भारत ने करीब 150 मिलियन टन से अधिक चावल उत्पादन के साथ चावल उत्पादन में चीन को पीछे छोड़ते हुए पहला स्थान हासिल किया है, जबकि गेहूं, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली जैसी फसलों में भी रिकॉर्ड उत्पादन दर्ज हुआ है। पहले भारत को पीएल-480 के तहत आयातित गेहूं पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन आज हालात यह हैं कि देश के गोदाम गेहूं और चावल से भरे पड़े हैं और सरकार को चिंता इस बात की है कि रखे कहाँ, जबकि दुनिया भारत के किसानों और नीतियों की सराहना कर रही है।

श्री चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार ने किसानों की आय बढ़ाने और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फलों और सब्जियों के साथ-साथ दालों के उत्पादन में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी करवाई है जिससे कुल उर्वरक उपयोग और लागत में कमी के साथ पौष्टिक आहार की उपलब्धता बढ़ी है। उन्होंने बताया कि दालों का उत्पादन लगभग 19 मिलियन टन से बढ़कर 25-26 मिलियन टन के आसपास पहुंच गया है और बागवानी उत्पादन भी 369 मिलियन टन से अधिक के स्तर पर पहुंच चुका है जो किसानों के लिए अतिरिक्त आय का बड़ा स्रोत बना है।

श्री चौहान ने प्राकृतिक खेती मिशन और जैविक खेती मिशन का जिक्र करते हुए कहा कि इन योजनाओं के जरिए सरकार मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन बढ़ाने, भूमि को रसायनमुक्त बनाने और किसानों की लागत घटाकर उनकी आय बढ़ाने पर फोकस कर रही है। शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि आज भारत का खाद्यान्न उत्पादन हरित क्रांति के शुरुआती दौर की तुलना में कई गुना अधिक हो चुका है और अब वृद्धि की रफ्तार भी पहले से तेज है।

फसलों का दूसरा अग्रिम अनुमान जारी

रबी फसलों के उत्पादन में 3.2 फीसदी वृद्धि का अनुमान

नई दिल्ली। कृषि मंत्रालय ने वर्ष 2025-26 के लिए खरीफ और रबी फसलों के दूसरे अग्रिम उत्पादन का अनुमान जारी कर दिया है। दूसरे अग्रिम अनुमानों के अनुसार वर्ष 2025-26 में खाद्यान्न उत्पादन के आंकड़े काफी अच्छे रहे हैं। खरीफ सीजन में खाद्यान्न उत्पादन 1741.44 लाख मीट्रिक टन और रबी सीजन में 1745.13 लाख मीट्रिक टन रहने का अनुमान है। पिछले वर्ष की तुलना में खरीफ में 2.8 फीसदी और रबी में 3.2 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है।

खरीफ सीजन में चावल का रिकॉर्ड 1239.28 लाख मीट्रिक टन उत्पादन होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष के 1227.72 लाख मीट्रिक टन से अधिक है। वहीं रबी सीजन में 167.20 लाख मीट्रिक टन चावल होने का अनुमान है। रबी सीजन में गेहूं का उत्पादन 1202.10 लाख मीट्रिक टन रहने का अनुमान है, जो पिछले साल के 1179.45 लाख मीट्रिक टन से 22.65 लाख मीट्रिक टन अधिक है। खरीफ में 302.47 लाख मीट्रिक टन और रबी में 159.03 लाख मीट्रिक टन मक्का का रिकॉर्ड उत्पादन होने का अनुमान है। तुअर दाल का उत्पादन 34.55 लाख मीट्रिक टन, चना 117.92 लाख मीट्रिक टन और मसूर का उत्पादन 17.33 लाख मीट्रिक टन रहने का अनुमान है। तिलहन क्षेत्र में खरीफ मूंगफली का उत्पादन 112.94 लाख मीट्रिक टन और सरसों का उत्पादन रिकॉर्ड 133.31 लाख मीट्रिक टन रहने का अनुमान है। वहीं, सोयाबीन का उत्पादन 127.20 लाख मीट्रिक टन आंका गया है। नकदी फसलों में गन्ने का उत्पादन भी रिकॉर्ड 5001.97 लाख मीट्रिक टन रहने की उम्मीद है, जबकि कपास का उत्पादन 290.91 लाख गांठ रहने का अनुमान है।

मंत्रालय ने बताया कि ये अनुमान राज्यों से प्राप्त आंकड़ों, रिमोट सेंसिंग रिपोर्ट और फसल कटाई प्रयोगों के आधार पर तैयार किए गए हैं। खरीफ फसलों के लिए कटाई प्रयोगों के डेटा को आधार बनाया गया है, जबकि रबी फसलों के लिए औसत उपज को ध्यान में रखा गया है। मंत्रालय ने कहा कि ग्रीष्मकालीन फसलों के आंकड़े तीसरे अग्रिम अनुमानों में शामिल किए जाएंगे। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सरकार किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध है और कृषि क्षेत्र में तकनीक व बेहतर प्रबंधन के कारण ही देश लगातार मजबूत उत्पादन की ओर बढ़ रहा है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

साप्ताहिक सुविचार

उसी की बुद्धि काम कर सकती है जिसकी इंद्रियां उसके वश में हों। - श्रीमद् भगवद् गीता

कृषि आदानों की गुणवत्ता

कृषि आदानों की गुणवत्ता को लेकर हर साल किसानों के साथ धोखाधड़ी का मामला आता है। इसका अब तक स्थाई समाधान नहीं खोजा गया। खरीफ एवं रबी सीजन की शुरुआत में हर वर्ष कृषि आदान प्रदायकों को चेतावनी दी जाती है इसके बावजूद भी उनके हौसले बुलंद हैं। कृषि आदानों विशेषकर उर्वरक, बीज एवं कीटनाशकों में सबसे अधिक गड़बड़ी सामने आती है। दोयम दर्जे के कृषि आदान धड़ल्ले से किसानों तक पहुंच जाते हैं। किसानों को इसका राज पता तब चलता है जब फसल कमजोर दिखती है और उत्पादन भी कम होता है। इस कार्य में कई प्रदायक संलिप्त है। प्रतिष्ठित कंपनियों के उत्पादों की सप्लाई को रोककर बी ग्रेड की कंपनी का उत्पाद प्रदाय करना एक प्रचलन बन गया है। ऐसा ही वाकया इस साल रबी सीजन के दौरान कई स्थानों पर उर्वरक सप्लाई के मामले में देखने को मिला। डीएपी का प्रदाय रोककर स्थानीय यूनिट का उत्पादित एन.पी.के. 12:32:16 एवं 20:20:0:13 सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को दिया गया। ये उत्पाद पूरी तरह घटिया एवं निम्न स्तर का निकला। जिन किसानों ने गेहूं एवं चना की बुवाई में उसका प्रयोग किया है उस खेत की फसल अधिक कमजोर है। तुलनात्मक अध्ययन में स्थानीय स्तर का एन.पी.के. बिल्कुल घटिया स्तर का निकला। प्रशासन से किसानों ने शिकायत भी की लेकिन आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। स्थानीय स्तर के प्रदायक पूरी सांठ-गांठ के साथ इस तरह का घिनौना कृत्य करते हैं। जिन्हें ऊपर से पूरा संरक्षण प्राप्त है।

किसान विरोधी इस तरह के कार्यों में सिर्फ किसान का नुकसान होता है। दोहरी मार उनके ऊपर पड़ती है। उत्पादन नुकसान के साथ ही उनकी आगे की पूरी व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। किसानों के साथ हो रहे इस अपराध को रोकने की जरूरत है। उच्च गुणवत्ता का कृषि आदान किसानों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी सरकार की है इसलिए सरकार को अपने दायित्व से पीछे नहीं हटना चाहिए। जो भी कृषि आदान प्रदाय किये जाते हैं उनका नमूना विश्लेषण समय समय पर होना चाहिए। अमानक पाये जाने पर संबंधित प्रदायक के खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए।

नौ दिनों का आध्यात्मिक पर्व चैत्र नवरात्रि 19 मार्च से

चैत्र नवरात्रि नौ दिनों का एक आध्यात्मिक पर्व है जो देवी दुर्गा और उनके नौ स्वरूपों (सामूहिक रूप से नवदुर्गा) को समर्पित है। यह चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष के पहले दिन से शुरू होता है और भगवान राम के जन्मदिवस राम नवमी को समाप्त होता है। परंपरागत रूप से, यह नवरात्रि सादगी, संयम और भक्ति के साथ मनाई जाती है। इसमें बाहरी उत्सवों के बजाय उपवास, प्रार्थना, मंत्रोच्चार और आंतरिक अनुशासन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है । कई आध्यात्मिक परिवारों में, चैत्र नवरात्रि को वर्ष की सच्ची आध्यात्मिक शुरुआत माना जाता है।

चैत्र नवरात्रि, जिसे वसंत नवरात्रि भी कहते हैं, हिंदू धर्म में शक्ति की उपासना का सबसे पावन पर्व है। इस वर्ष 19 मार्च से चैत्र नवरात्रि का पर्व शुरू हो रहा है। यह 9 दिनों तक माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों (नवदुर्गा) की पूजा, आध्यात्मिक शुद्धि, और नए साल (हिंदू नव संवत्सर) की शुरुआत का प्रतीक है, जो जीवन में सकारात्मकता, शक्ति और सुख-समृद्धि लाता है। यह राम नवमी से भी जुड़ा है।

संपूर्ण संसार की उत्पत्ति का मूल कारण शक्ति ही है, जिसे ब्रह्मा, विष्णु व शिव तीनों ने मिलकर मां नवदुर्गा के रूप में सृजित किया, इसलिए मां दुर्गा में ब्रह्मा, विष्णु व शिव तीनों की शक्तियां समाई हुई हैं। आदिशक्ति देवी मां दुर्गा का हर रूप एक अद्वितीय गुण या शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। जैसे- शैलपुत्री शक्ति और स्थिरता का प्रतिनिधित्व करती हैं, ब्रह्मचारिणी तपस्या का प्रतीक हैं और सिद्धिदात्री परम तृप्ति और ज्ञान प्रदान करती हैं। आदिशक्ति या आदि पराशक्ति या महादेवी मां दुर्गा को सनातन, निराकार, परब्रह्म, जो कि ब्रह्मांड से भी परे एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में माना जाता है।

भारत में एक साल में चैत्र, आषाढ़, आश्विनी या शरद, पौष और माघ के महीनों में कुल मिलाकर पांच बार नवरात्रि आती है लेकिन इनमें से चैत्र और शारदीय नवरात्र ज्यादा धूमधाम से मनाया जाता है। सभी नवरात्रि में पूरे नौ दिन तक इस त्योहार को मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि, चैत्र के शुक्ल पक्ष के दौरान मनाई जाती है। चैत्र नवरात्रि के साथ ही हिन्दू नव वर्ष की शुरुवात होती है। पौष और आषाढ़ के महीने की नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहा जाता है, क्योंकि उस नवरात्रि में तंत्र साधना की जाती है। पारिवारिक लोगों द्वारा केवल चैत्र और शारदीय नवरात्रि को ही मनाया जाता है।

कथा के अनुसार, जब धरती पर महिषासुर का आतंक काफी बढ़ गया था और वरदान के कारण कोई भी देवता या दानव उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सका, तो ऐसे में देवताओं ने माता पार्वती को प्रसन्न कर उनसे रक्षा करने को कहा। इसके बाद मातारानी ने अपने अंश से नौ रूप प्रकट किए, जिन्हें देवताओं ने अपने शस्त्र देकर शक्तिशाली बनाया। ये क्रम चैत्र के महीने में प्रतिपदा तिथि से शुरू होकर 9 दिनों तक चला और यही कारण है कि इन नौ दिनों को चैत्र नवरात्रि के तौर पर मनाया जाने लगा।

चैत्र नवरात्रि का मुख्य महत्व

■ **आध्यात्मिक शुद्धि और शक्ति उपासना:** इन 9 दिनों में व्रत, उपवास और साधना से मन और शरीर शुद्ध होते हैं, तथा माँ दुर्गा से ज्ञान, साहस और समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है।

■ **हिंदू नव वर्ष का आरंभ:** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही विक्रम संवत के अनुसार हिंदू नव वर्ष की शुरुआत होती है, जिसे नए संकल्पों के लिए उत्तम माना जाता है।

■ **ऋतु परिवर्तन और स्वास्थ्य:** यह समय वसंत से ग्रीष्म ऋतु के संक्रमण का है। उपवास शरीर को बदलते मौसम के अनुकूल ढलने में मदद करता है और डिटॉक्स करता है।

■ **नवदुर्गा के नौ रूप:** हर दिन माँ के विशेष स्वरूप (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, आदि) की पूजा से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं।

■ **राम नवमी:** नवरात्रि के नौवें दिन भगवान राम का जन्मोत्सव मनाया जाता है, जो धर्म की स्थापना का प्रतीक है।

धार्मिक मान्यता है कि चैत्र नवरात्रि में माँ दुर्गा स्वयं धरती पर आती हैं, इसलिए इन दिनों की गई साधना से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

उमरनी में प्रक्षेत्र दिवस आयोजित

उज्जैन। कृषि विज्ञान केन्द्र उज्जैन द्वारा जैव संवर्धित परियोजना के अंतर्गत किसानों के खेतों पर 50 प्रदर्शन लगाए जा रहे हैं। इसी क्रम में 6 मार्च 2026 को ग्राम उमरनी, तहसील खाचरौद में प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ए.के. दीक्षित के मार्गदर्शन में किसान गंगाबाई के खेत पर आयोजित किया गया, आसपास के किसानों ने भाग लेकर नई जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. सविता कुमारी ने किसानों को जैव संवर्धित (बायोफोर्टिफाइड) फसलों के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इन फसलों में पोषक तत्व अधिक होते हैं, जो कुपोषण जैसी गंभीर समस्या को कम करने में मदद करते हैं। यदि किसान अपने रोज़ाना के भोजन में इन फसलों से बने खाद्य पदार्थ शामिल करें, तो गांव स्तर पर पोषण की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

वैज्ञानिक डॉ. एच.आर. जाटव ने किसानों को जैव संवर्धित फसलों की उत्पादन तकनीक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इन फसलों की खेती लघु और सीमांत किसानों के लिए भी आसान और लाभकारी है। इस अवसर पर डॉ. ए.के. दीक्षित ने बताया कि देश में खाद्यान्न सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा पर भी जोर दिया जा रहा है।

अनमोल वचन

शुभकामनाओं के साथ सोओ और शुभकामनाओं के साथ उठो। - विद्यासागर जी महाराज

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

चैत्र कृष्ण/ चैत्र शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2082/83 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
17 मार्च 26	मंगलवार	चैत्र कृष्ण-13	पंचक
18 मार्च 26	बुधवार	चैत्र कृष्ण-14	पंचक
19 मार्च 26	गुरुवार	चैत्र कृष्ण-30/1	गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रारंभ
20 मार्च 26	शुक्रवार	चैत्र शुक्ल-2	पंचक 4.5 रात आंत तक
21 मार्च 26	शनिवार	चैत्र शुक्ल-3	
22 मार्च 26	रविवार	चैत्र शुक्ल-4	
23 मार्च 26	सोमवार	चैत्र शुक्ल-5	
24 मार्च 26	मंगलवार	चैत्र शुक्ल-6	
25 मार्च 26	बुधवार	चैत्र शुक्ल-7	
26 मार्च 26	गुरुवार	चैत्र शुक्ल-8	दुर्गाष्टमी व्रत
27 मार्च 26	शुक्रवार	चैत्र शुक्ल-9	श्रीराम नवमी
28 मार्च 26	शनिवार	चैत्र शुक्ल-10	
29 मार्च 26	रविवार	चैत्र शुक्ल-11	
30 मार्च 26	सोमवार	चैत्र शुक्ल-12	प्रदोष व्रत

क्यों जरूरी है जायद मूंग में पोषक तत्व प्रबंधन?

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
सीनियर जीएम एवं हेड एग्रोनामिस्ट
आर.एम.पी.सी.एल., इंदौर (म.प्र.)

ग्रीष्मकालीन यानि जायद मूंग की खेती किसानों के लिये वरदान साबित हो रही है। प्रदेश में इस साल 12 लाख हेक्टेयर में जायद मूंग की खेती प्रस्तावित है। किसानों द्वारा संतुलित उर्वरक उपयोग एवं पोषक तत्व प्रबधन पर ध्यान नहीं देने से जायद मूंग का उत्पादन अपेक्षाकृत कम मिलता है। साथ ही हमें प्रोटीनयुक्त मूंग नहीं मिल पाती। मूंग के दानों की गुणवत्ता अच्छी नहीं होने से बाजार भाव भी कम मिलता है। उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएमपीसीएल ने किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए ग्रीष्मकाल में बोयी जाने वाली मूंग से बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये 'महावीरा ज़िरोंन पावर प्लस' उपलब्ध करवाया है जो मूंग के लिये सर्वश्रेष्ट खाद है। किसानों की नजर में 'मूंग मतलब ज़िरोंन' है।

'मूंग मतलब ज़िरोंन'

- छ: पोषक तत्वों फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम से भरपूर।
- 2 बोरी प्रति एकड़ बुवाई के समय करें प्रयोग।
- पोषणयुक्त एवं चमकदार दाना देने में सक्षम जो मानव स्वास्थ्य के लिये लाभकारी।
- 15 से 25 प्रतिशत पायें अधिक उत्पादन।
- किसानों द्वारा जांचा एवं परखा गया सर्वश्रेष्ठ खाद।

कैसे मिलेगा मूंग से बेहतर उत्पादन?

उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएमपीसीएल ने किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए ग्रीष्मकाल में बोयी जाने वाली मूंग से बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये 'महावीरा ज़िरोंन पावर प्लस' उपलब्ध करवाया है जो मूंग के लिये सर्वश्रेष्ट खाद है। किसानों की नजर में 'मूंग मतलब ज़िरोंन' है। मूंग बोने के लिये खेत की तैयारी करके बुवाई के समय आधार खाद के रूप में महावीरा ज़िरोंन की दो बोरी (प्रत्येक 50 किलो) प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिये। दो बोरी प्रति एकड़ महावीरा ज़िरोंन प्रयोग करने से आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है।

जायद मूंग से सर्वाधिक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। जिनमें तीन मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश है। द्वितीयक तीन पोषक तत्व कैल्शियम, सल्फर एवं मैग्नीशियम हैं। आठ प्रकार के अन्य पौषक तत्व भी होते हैं। महावीरा ज़िरोंन पावर प्लस उपयोग करने से एक साथ छ: पोषक तत्वों सल्फर, कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम जिंक एवं बोरोन की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
फॉस्फोरस	16 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत

पोषक तत्व आपूर्ति कैसे करें?

जायद मूंग की बुवाई के दौरान 2 बोरी यानि एक क्विंटल महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग करें। बुवाई के दौरान 13 किलोग्राम एमओपी (पोटाश) एवं 4 किलोग्राम सिमट्रॉन (माइकोराजा) एवं चेलग्रो चिलेटेड मैग्नीशियम 10 प्रतिशत 500 ग्राम अवश्य प्रयोग करें। बुवाई के 15 से 20 दिन बाद 18 किलोग्राम यूरिया एवं 40 से 45 दिन बाद 250 मिलीलीटर एमिट्रॉन-जेड (जिंक+अमिनो एसिड) का छिड़काव करें। जल घुलनशील उर्वरक 4 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में 70 से 75 दिन की अवधि में 00:00:50 एवं 00:52:34 का एक छिड़काव अवश्य करें। यह उर्वरक अन्य उर्वरकों की तुलना में गुणवत्तायुक्त एवं सर्वाधिक उत्पादन देने में सक्षम है। इसके प्रयोग से उत्पादित मूंग पोषणयुक्त होने से मानव स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक लाभकारी है।

क्यों आवश्यक है जायद मूंग के लिये 'महावीरा ज़िरोंन पावर प्लस'?

महावीरा जिरोन पावर प्लस फॉस्फोरस, बोरोन, गंधक, जिंक, कैल्शियम एवं मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर है। यह मूंग के पौधों को हरा-भरा रखकर ज्यादा फूल एवं फलियों का निर्माण करता है। साथ ही फसल में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस के उपयोग से मूंग का उत्पादन 15 से 25 प्रतिशत बढ़ जाता है। इसके प्रयोग से उत्पादित मूंग प्रोटीनयुक्त एवं गुणवत्ता से परिपूर्ण होता है। चमकदार एवं एक समान दाना होने से मूंग का बाजार भाव भी अधिक मिलता है।

- महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध 16 प्रतिशत **फॉस्फोरस** तत्व जड़ों की वृद्धि में महत्वपूर्ण है और यह दलहनी फसलों में जीवाणुओं द्वारा नाइट्रोजन स्थिर करने में मदद करता है।
- **मैग्नीशियम** तत्व फोटोसिन्थेसिस और फसल के प्रारंभिक विकास के लिए आवश्यक है, यह क्लोरोफिल की मात्रा को बढ़ाता है और फसल के प्रारंभिक विकास के लिए जरूरी होता है।
- **जिंक** तत्व क्लोरोफिल उत्पादन में महत्वपूर्ण है और यह प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को भी बढ़ाता है।
- **बोरॉन** तत्व फल, फूल लगने की प्रक्रिया को तेज कर उनकी मात्रा बढ़ाता है।
- **सल्फर** तत्व कीटनाशक की तरह कार्य करता है साथ ही फसल की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है।
- **कैल्शियम** तत्व पौधों के जड़ों के विकास और अंगों की रचना के लिए आवश्यक होता है तथा पौधों को मजबूती प्रदान करता है।

मूँग की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 08:16:08) प्रति एकड़

अवधी	Mahaveera Ziron Power Plus	MOP	UREA	SYMTRON (Mycorrhiza)	Chelgro Chelated Mn 10 %	AMITRON-Z (Zinc + Amino Acid)	00:52:34
	KG	KG	KG	KG	Gm	ML	KG
बुवाई के समय	100	13	0	4	500	0	0
15-20 दिन बाद में	0	0	18	0	0	0	0
40-45 दिन बाद में	0	0	0	0	0	250	0
65-70 दिन बाद में	0	0	0	0	0	0	1
कुल मात्रा	100	13	18	4	500	250	1
जल घुलनसील उर्वरक 4-5 ग्राम /लीटर पानी मे	70-75 दिन की अवधि मे 00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करे। इस से उत्पादन मे विशेष फायदा मिलता हैं।						

महावीरा जिरोन पावर प्लस से संबंधित अधिक जानकारी कंपनी के कस्टमर केयर नंबर 8956926412 पर ली जा सकती है।

● अनिल कुर्मी ● सूर्यकांत नागरे
कृषि विज्ञान केंद्र, अनूपपुर,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय
विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.)
● ब्रजेश कुमार नामदेव
कृषि विज्ञान केन्द्र, नर्मदापुरम,
भाऊ साहब भुस्कुटे लोक न्यास,
गोविंदनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

परागणक कीटों का कृषि में महत्व

परिस्थितिकी में पेड़-पौधे प्राथमिक उत्पादक के रूप में भूमिका निभाते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में पेड़ पौधों का होना तथा उनमें विविधिता होना आवश्यक है।

पेड़-पौधों की नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए बीजों की आवश्यकता होती है तथा बीज निर्माण होने के लिए आवश्यक है परागण की क्रिया। परागण की क्रिया पौधे के पुष्प में संपन्न होती है। परागण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से परागकण को पुष्प के नर भाग से मादा भाग में स्थानांतरित किया जाता है जिसके परिणामस्वरुप बीज का निर्माण होता है। पौधे प्रकृति में स्थिर होते हैं, वे परागण प्रक्रिया को पूरा करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकते। ऐसी स्थिति में पेड़-पौधों को बीज उत्पन्न करने के लिए स्वयं परागण करना होगा या पुष्प के नर भाग से मादा भाग तक परागकण ले जाने के लिए बाहरी माध्यम का उपयोग करना होगा। कुछ पौधे जिनके पुष्पों में मादा भाग नर भाग के पास स्थित होता है, वे स्वयं परागण प्रक्रिया को पूरा कर सकते हैं। लेकिन जहां स्व-परागण संभव नहीं है, वहां परागण की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए परागकण के परिवहन के लिए बाहरी माध्यम की आवश्यकता होती है। परागण की क्रिया जिसमे माध्यम की जरूरत होती है उसे परपरागण कहते हैं। परपरागण की क्रिया में जन्तु प्रमुख भूमिका निभाते हैं तथा इन जन्तुओं को परागणक जन्तु कहते हैं। यही परागणक जन्तु परागण प्रक्रिया को संपन्न करने में मदद करते हैं।

परागणक कीटों का कृषि में महत्व

एक अनुमान के अनुसार जन्तु-परागित एंजियोस्पर्मों की वैश्विक संख्या लगभग 308006 है, जो फूल वाले पौधों की अनुमानित 87.5 प्रतिशत संख्या है। मानव द्वारा उपयोग की जाने वाली 115 वैश्विक अग्रणी फसलों में से 87 फसलें जन्तु परागण पर निर्भर हैं। मात्रा की दृष्टि से हमारे द्वारा उत्पादित 35 प्रतिशत फसलें जन्तु परागण पर निर्भर हैं। जन्तु परागण के अभाव में कुल कृषि उत्पादन में लगभग 3 से 8 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष कमी आ सकती है।

एक अनुमान के अनुसार 350,000 जन्तुओ की प्रजातियां परागणक के रूप में काम करती हैं। लगभग 1000 चमगादड़, चूहे, पक्षी आदि जैसे कशेरुक हैं। सभी जन्तु समूहों में कीट सबसे बड़ा समूह है और मधुमक्खियां कीट परागणक का सबसे महत्वपूर्ण समूह हैं। हमारी खाद्य फसलों और पशु उत्पादों का एक तिहाई हिस्सा कीट परागण, ज्यादातर मधुमक्खी परागण वाली फसलों से आता है।

मधुमक्खी परागण करने वाले कीटों का एक बड़ा समूह है। विश्व स्तर पर 2000 से अधिक मधुमक्खियों की प्रजातियों का वर्णन किया गया है। कृषिगत फसलो में परागण के लिए मधुमक्खियों की सभी प्रजातियाँ महत्वपूर्ण नहीं हैं। मधुमक्खी की 20000 प्रजातियों में से केवल 121 प्रजातियां ही फसलों में परागणक के रूप में काम करती हैं। दो प्रतिशत प्रजातियां 80 प्रतिशत फसल परागण के लिए जिम्मेदार हैं और बाकी फसल पर शायद ही कभी आते हैं। भारतीय महाद्वीप में शहद उत्पादन करने वाली मधुमक्खियों की प्रमुख चार स्वदेशी परागणक प्रजातियां पाई जाती हैं। 1) एपिस सेराना, 2) एपिस डोरसाटा, 3) एपिस फ्लोरिया तथा 4) एपिस एंड्रेनिफोर्मेस। इन प्रजातियों में से, एपिस सेराना और एपिस डोरसाटा भारत में सब्जियों सहित सभी फसलों के पर-परागण के लिए सबसे प्रमुख परागणक हैं। ये दो प्रजातियां कुल परागणकों की आबादी का क्रमश: 46 और 42 प्रतिशत है। कीटनाशकों का उपयोग, आवास विनाश, बीमारी, प्रदूषण और प्रतिस्पर्धा कीट परागणकों के लिए गंभीर चिंता का कारण बन रही है। बढ़ते परागण संकट से हमारी खाद्य सुरक्षा को खतरा है। एक अनुमान के अनुसार सभी फूलों वाले पौधों में से 62 प्रतिशत को परागणकों की कमी के परिणामस्वरूप बीज से उत्पादन में कमी का सामना करना पड़ सकता है । पिछले दशकों में पर-परागण पर निर्भर फसलों का क्षेत्र बढ़ा है, जिससे पता चलता है कि निकट भविष्य में परागणक कीटों की आवश्यकता बहुत बढ़ जाएगी। मानवीय हस्तक्षेप के कारण वर्तमान प्रजातियों के विलुप्त होने की दर 100-1000 गुना अधिक है, विशेष रूप से मधुमक्खियां और तितलियां विलुप्त होने का सामना कर रही हैं।

परागणक कीटों की संख्या में गिरावट के कारण

▸▸ **कीटनाशक:** कीटनाशक और विशेष रूप से कीटनाशकों का अविवेकपूर्ण उपयोग कीट परागणकों की संख्या में गिरावट का प्रमुख कारण है। कई कीटनाशक मधुमक्खियों के लिए विषैले हैं लेकिन कृषि में कीट नियंत्रण में इनका लगातार उपयोग किया जा रहा है। कई किसान कीटनाशकों के विषाक्तता स्तर और उनके विवेकपूर्ण उपयोग के बारे में अनभिज्ञ हैं। कीटनाशकों की समस्याएँ प्रयोग के दौरान लेबल पर अंकित चेतावनियों और सिफारिशों के बावजूद जानबूझकर दुरुपयोग से उत्पन्न होती हैं। **(शेष पृष्ठ 13 पर)**

छोटे हैं पर घातक हैं

सर्दियों की फसलों पर मंडराता अदृश्य खतरा

● वंशिका तिवारी ● डॉ. अखिलेश कुमार
● श्री संदीप शर्मा ● डॉ. संजय सिंह
● डॉ. ए.के. पांडेय
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

सर्दियों का मौसम किसानों के लिए उम्मीदों का मौसम होता है। गेहूँ की हरियाली, सरसों की पीली चादर, चने की कोमल पत्तियाँ और सब्जियों की ताजगी आशा से भरी दिखाई देती हैं।

लेकिन इसी हरियाली के बीच कुछ सूक्ष्म और छिपे हुए कीट सक्रिय हो जाते हैं, जो देखने में छोटे होते हैं, परंतु नुकसान में गंभीर प्रभाव डालते हैं। ये कीट पौधों का रस चूसते हैं, रोग फैलाते हैं और उत्पादन तथा गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करते हैं।

▸▸ माहू (चीपक- मीठा रस चूसने वाला कीट)
▸▸ स्थानीय नाम (रीवा) माहू/चिपचिपा कीड़ा
▸▸ **वैज्ञानिक नाम:** एफिड प्रजातियाँ
▸▸ **प्रभावित फसलें:** सरसों, चना, मटर, गोभी, आलू

नुकसान

▸▸ पौधों का रस चूसकर उन्हें कमजोर करना
▸▸ पत्तियों का मुड़ना और पीला पड़ना
▸▸ वृद्धि रुक जाना
▸▸ काली फफूंद का विकास

रोकथाम

▸▸ नीम आधारित कीटनाशक (1500-3000 पीपीएम)
▸▸ पीले चिपचिपे फंदे
▸▸ संतुलित उर्वरक प्रबंधन
▸▸ **जेसिड**- पत्तियों को जलाने वाला कीट
▸▸ **स्थानीय नाम:** हरा फुदका
▸▸ **वैज्ञानिक नाम:** अम्रास्का बिगुटुला बिगुटुला

लक्षण

▸▸ पत्तियों के किनारे पीले और भूरे होना
▸▸ हॉपर बर्न लक्षण
▸▸ उत्पादन में कमी

नियंत्रण

▸▸ नीम तेल छिड़काव
▸▸ मित्र कीट संरक्षण
▸▸ संतुलित उर्वरक उपयोग
▸▸ **सफेद मक्खी**- विषाणु रोग फैलाने वाली कीट
▸▸ **स्थानीय नाम:** सफेद मच्छर
▸▸ **वैज्ञानिक नाम:** बेमिसिया टैबासी

नुकसान

▸▸ पत्तियों का पीला पड़ना
▸▸ पीला मोजेक रोग फैलाना
▸▸ उपज में कमी

रोकथाम

▸▸ पीले स्टिकी ट्रैप
▸▸ संक्रमित पौधों को हटाना
▸▸ आवश्यकता अनुसार नियंत्रित कीटनाशक प्रयोग
▸▸ **थ्रिप्स**- फूल और फल को नुकसान पहुँचाने वाला कीट
▸▸ **स्थानीय नाम:** सूक्ष्म कीड़ा
▸▸ **वैज्ञानिक नाम:** थ्रिप्स टैबासी
▸▸ **प्रभावित फसलें:** प्याज, लहसुन, मटर, सब्जियां

पहचान

▸▸ पत्तियों पर चांदी जैसी धारियां
▸▸ फूल गिरना ▸▸ फल विकृत होना

नियंत्रण

▸▸ नीम आधारित उपाय

▸▸ नियमित निगरानी
▸▸ संतुलित सिंचाई

समेकित कीट प्रबंधन

▸▸ सप्ताह में दो बार खेत निरीक्षण
▸▸ पीले व नीले चिपचिपे फंदे
▸▸ जैविक कीटनाशकों को प्राथमिकता
▸▸ संतुलित उर्वरक एवं सिंचाई
▸▸ मित्र कीट संरक्षण
▸▸ आवश्यकता होने पर ही रासायनिक नियंत्रण

निष्कर्ष: सर्दियों में सक्रिय ये छोटे कीट अदृश्य चुनौती बन जाते हैं। समय पर पहचान और नियंत्रण न होने पर ये उपजए गुणवत्ता और बाजार मूल्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। वैज्ञानिक खेती, नियमित निगरानी और समेकित कीट प्रबंधन ही सुरक्षित और अधिक उत्पादन की कुंजी है।

समय रहते सावधानी, सुरक्षित रहे फसल और किसान।

- **वंशिका तिवारी** (कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष छात्रा)
- **अनुराधा साकेत** (कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष छात्रा)
- **संदीप कुमार शर्मा** (कृषि मौसम वैज्ञानिक)
- **डॉ. संजय सिंह** (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी)

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

भिंडी की वैज्ञानिक खेती

उन्नत तकनीक से कम लागत में पाएं बंपर पैदावार

भिंडी भारत की प्रमुख सब्जी फसलों में से एक है, जिसकी खेती देश के लगभग सभी कृषि-जलवायु क्षेत्रों में व्यापक रूप से की जाती है। यह फसल अपनी कम अवधि, निरंतर तुड़ाई और बाजार में स्थायी मांग के कारण किसानों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।

भिंडी की खेती छोटे, मध्यम तथा बड़े सभी वर्ग के किसान आसानी से कर सकते हैं। इसकी फसल अपेक्षाकृत कम समय में तैयार होकर किसानों को नियमित नकद आय प्रदान करती है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। भिंडी की उपयोगिता केवल घरेलू खपत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह होटल, रेस्टोरेंट, प्रोसेसिंग उद्योग और स्थानीय मंडियों में भी बड़े पैमाने पर उपयोग की जाती है। इसकी खेती खरीफ, रबी और जायद तीनों मौसमों में संभव होने के कारण इसे बहुवर्षीय लाभ देने वाली फसल के रूप में देखा जाता है।

पोषण एवं आर्थिक महत्व

भिंडी पोषण की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध सब्जी मानी जाती है। इसमें विटामिन-ए, विटामिन-सी, विटामिन-के, फोलेट, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम तथा आहार फाइबर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, पाचन क्रिया को दुरुस्त रखने तथा हृदय संबंधी रोगों के जोखिम को कम करने में सहायक होती है। भिंडी का सेवन मधुमेह रोगियों के लिए भी लाभकारी माना जाता है क्योंकि इसमें घुलनशील फाइबर की मात्रा अधिक होती है जो रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। आर्थिक दृष्टि से भिंडी एक अत्यंत लाभकारी फसल है क्योंकि इसकी लागत अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि बाजार में इसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है। निरंतर तुड़ाई के कारण किसान सप्ताह में कई बार फसल बेचकर नियमित आय अर्जित कर सकते हैं, जिससे उनकी नकदी प्रवाह की समस्या काफी हद तक कम हो जाती है।

उपयुक्त जलवायु एवं मिट्टी

भिंडी की सफल खेती के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु को सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। इसकी अच्छी वृद्धि और अधिक उपज के लिए 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श होता है। अत्यधिक ठंड या पाले की स्थिति में भिंडी की वृद्धि प्रभावित होती है और पौधों में फूल एवं फल बनने की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। वहीं अत्यधिक वर्षा या जलभराव की स्थिति में जड़ सड़न और फफूंदजनित रोगों का खतरा बढ़ जाता है। मिट्टी की बात करें तो भिंडी के लिए बलुई दोमट से दोमट मिट्टी, जिसमें जल निकास की समुचित व्यवस्था हो, सर्वोत्तम मानी जाती है। मिट्टी का पीएच मान 6.0 से 6.8 के बीच होना चाहिए जिससे पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों का अवशोषण ठीक प्रकार से हो सके।

उन्नत किस्में एवं उनका महत्व

भिंडी की खेती में उन्नत एवं संकर किस्मों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्नत किस्में न केवल अधिक उत्पादन देती हैं, बल्कि रोगों और कीटों के प्रति भी अपेक्षाकृत अधिक सहनशील होती हैं। आधुनिक कृषि अनुसंधानों द्वारा विकसित किस्में कम समय में तैयार होती हैं और उनकी फल गुणवत्ता भी बेहतर होती है। सही किस्म का चयन क्षेत्र की जलवायुस मिट्टी की स्थिति तथा बाजार की मांग को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए, जिससे किसान को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

खेत की तैयारी

भिंडी की खेती के लिए खेत की उचित तैयारी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह फसल की प्रारंभिक वृद्धि और जड़ विकास को प्रभावित करती है। खेत की तैयारी के लिए सबसे पहले 2 से 3 गहरी जुताई की जाती है ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए और उसमें वायु संचार बेहतर हो सके। इसके बाद पाटा लगाकर खेत को समतल किया जाता है। अंतिम जुताई के समय सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट मिलाना अत्यंत लाभकारी होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और पौधों को प्रारंभिक अवस्था में आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं।

बीज दर, बीज उपचार एवं बुवाई विधि

भिंडी की खेती में बीज की गुणवत्ता उपज को सीधे प्रभावित करती है। स्वस्थ, प्रमाणित एवं रोगमुक्त बीज का चयन करना अत्यंत आवश्यक होता है। प्रति हेक्टेयर लगभग 8 से 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त माना जाता है। बुवाई से पूर्व बीजों को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करना आवश्यक होता है ताकि बीजजनित रोगों से बचाव हो सके। बुवाई सामान्यतः कतारों में की जाती है, जिससे निराई-गुड़ाई और सिंचाई जैसे कृषि कार्यों को सुगमता से किया जा सके। पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखना आवश्यक होता है ताकि उन्हें पर्याप्त सूर्य प्रकाश, वायु और पोषक तत्व मिल सकें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

भिंडी की अच्छी वृद्धि और अधिक उपज के लिए संतुलित पोषण प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। खेत में जैविक खाद के साथ-साथ नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का संतुलित प्रयोग किया जाता है। नाइट्रोजन पौधों की हरित वृद्धि के लिए आवश्यक होती हैए जबकि फास्फोरस जड़ विकास और फूल आने में सहायक होती है। पोटाश फल की गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नाइट्रोजन की मात्रा को दो भागों में देना अधिक लाभकारी माना जाता हैए जिससे पौधों को लंबे समय तक पोषण मिलता रहे।

सिंचाई एवं जल प्रबंधन

भिंडी की फसल में नियमित और नियंत्रित सिंचाई की आवश्यकता होती है। बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई की जाती है ताकि बीजों का अंकुरण अच्छा हो सके। गर्मियों के मौसम में 5 से 7 दिन के अंतराल पर सिंचाई आवश्यक होती है, जबकि वर्षा ऋतु में आवश्यकता अनुसार सिंचाई की जाती है। जलभराव की स्थिति से बचाव अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इससे जड़ सड़न और अन्य रोगों की संभावना बढ़ जाती है।

खरपतवार प्रबंधन

फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार भिंडी के पौधों के साथ पोषक तत्वों, जल और प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं जिससे उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए समय पर खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक होता है। खेत को साफ रखने से न केवल पौधों की वृद्धि अच्छी होती है, बल्कि रोग और कीटों का प्रकोप भी कम होता है।

रोग, कीट एवं उनका प्रबंधन

भिंडी की फसल में कई प्रकार के रोग और कीटों का प्रकोप देखा जाता है, जिनमें पीत शिरा मोजेक रोग, पाउडरी मिल्ड्यू, फल एवं तना छेदक प्रमुख हैं। पीत शिरा मोजेक रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों की नसें पीली पड़ जाती हैं और फल विकृत हो जाते हैं। इस रोग के नियंत्रण के लिए रोगग्रस्त पौधों को तुरंत नष्ट करना और कीट वाहकों का नियंत्रण आवश्यक होता है। कीट नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाना सबसे प्रभावी उपाय माना जाता है।

कटाई, उत्पादन एवं विपणन

भिंडी की पहली तुड़ाई बुवाई के लगभग 45 से 50 दिन बाद प्रारंभ हो जाती है। फल कोमल और हरे अवस्था में तोड़े जाते हैं ताकि उनकी गुणवत्ता बनी रहे। 2 से 3 दिन के अंतराल पर नियमित तुड़ाई करने से पौधों में नई फलियों का विकास होता रहता है। वैज्ञानिक विधियों से खेती करने पर प्रति हेक्टेयर 100 से 150 क्विंटल तक उपज प्राप्त की जा सकती है। उचित ग्रेडिंग और समय पर विपणन से किसान को बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

भिंडी की खेती कम समय में अधिक उत्पादन और निरंतर आय प्रदान करने वाली एक अत्यंत लाभकारी सब्जी फसल है। उचित जलवायु, उपयुक्त मिट्टी, उन्नत किस्मों, संतुलित पोषण प्रबंधन और वैज्ञानिक खेती तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं। बदलते कृषि परिदृश्य में भिंडी की खेती किसानों के लिए आर्थिक स्थिरता और पोषण सुरक्षा का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रही है।

हर दिन महिला दिवस है

● **डॉ गीता सिंह,** वैज्ञानिक, कृषि विस्तार कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी (म.प्र.) जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक ऐसा विशेष दिन जब हम महिलाओं के संघर्ष, उपलब्धियों और समाज में उनके योगदान को सम्मानित करते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि नारी शक्तिए ज्योति और प्रेरणा का स्रोत है, जो हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है।

आज के दिन हम महिलाओं के अधिकारों और सम्मान के प्रति जागरूकता बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। हम सभी को समान अवसर प्रदान करने और महिलाओं के विकास के लिए समर्थन करने का वादा करते है। आइए हम सब मिलकर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम करें और एक ऐसा माहौल बनाएं जहां वे अपने सपनों को पूरा कर सकें।

कृषि में महिलाएं ऐसे कई कार्य करती हैं जो अवैतनिक होते हैं जैसे रोपाई, निंदाई गुड़ाई, कटाई, गहाई एवं भंडारण ये सभी वो कार्य होते हैं जो दिखाई देते हैं किंतु उनको इन कार्यों का कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता है। इसी प्रकार महिलाओं द्वारा ऐसे कितने ही कार्य किए जाते हैं जो दिखाई भी नहीं देते और उनको नजर अंदाज किया जाता है जैसे-

▸▸पानी की व्यवस्था: ग्रामीण महिलाएं अक्सर दूर के स्रोत से पानी लाती हैं। ये कार्य कही नहीं गिना जाता है पूरे परिवार के लिए पानी की व्यवस्था बनाना महिलाओं के हिस्से ही आता है और ये बहुत ही मेहनत का काम होता है। बिना पानी के तो घर के कितने ही कार्य अवरुद्ध हो जाएंगे।

▸▸चारा संग्रहण: महिलाएं पशुओं के लिए चारा इकट्ठा करती हैं। पशुशाला की साफ-सफाई करती हैं गोबर का प्रबंधन करती हैं।

▸▸ईंधन की लकड़ी एकत्रित करना: खाना बनाने हेतू जलाऊ लकड़ी लाना एवं ठंडी, गर्मी, बरसात हर दिन पूरे परिवार के लिए भोजन तैयार करती हैं और वो भी चूल्हे के धुएं को बर्दाश्त करके।

घरेलू कार्य और बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल

ये सभी कार्य प्रधानता से महिलाओं द्वारा ही सम्पन्न किए जाते हैं जो न तो दिखाई देते हैं और न ही उनको कोई महत्व दिया जाता है।

कृषि में इतने अधिक कार्यों का संपादन करने के बाद भी कृषि में महिला नेतृत्व में कमी है ऐसी कौन सी बाधाएं हैं जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकती है। कृषि क्षेत्र में, ग्रामीण महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाएं निभाने की उनकी क्षमता में बाधा डालने वाली प्रमुख चुनौतियां हैं-

स्वामित्व और संसाधन संबंधी

ये बाधाएं मुख्य रूप से उत्पादक संसाधनों पर स्वामित्व की कमी से जुड़ी हैं। हमारे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं का भूमि पर मालिकाना हक सीमित रहता है। जो महिलाओं को ओपचारिक कृषि संगठनों की पूर्ण सदस्य बनने, मतदान अधिकार प्राप्त करने और नेतृत्व निकायों में भाग लेने की क्षमता को बाधित करता है। स्वामित्व न होने से संस्थागत ऋण, आवश्यक कृषि उपकरण और कृषि विस्तार सेवाओं तक पहुंच असमान बनी रहती है।

▸▸वित्तीय बाधाएं: घरेलू आय पर सीमित नियंत्रण महिलाओं की निवेश क्षमता को बाधित करता है। ग्रामीण महिलाओं का अपनी मजदूरी और घरेलू वित्तीय निर्णय लेने पर अक्सर सीमित नियंत्रण होता हैए जिससे नई कृषि तकनीकी या औपचारिक समूहों में निवेश करने की उनकी क्षमता कम हो जाती है।

सामाजिक और सहभागिता संबंधी प्रतिबंध

सामाजिक मापदंड महिलाओं के सार्वजनिक आचरण और उपस्थिति को नियंत्रित करते हैंए जिससे कृषि के व्यावसायिक और औपचारिक पक्ष में उनकी भागीदारी गंभीर रूप से सीमित हो जाती है। सामाजिक मानदंड महिलाओं को अकेले यात्रा करने, दूर के बाजारों/मंडियों में भाग लेने या सभाओं में सार्वजनिक रूप से बोलने से रोकते हैं।

▸▸समय की विवशता: गहन कृषि श्रम के साथ साथ भारी अवैतनिक देखभाल कार्य जैसे खाना बनाना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल पानी लानाए घर और पशुओं संबंधी कार्य प्रशिक्षण, संगठनात्मक बैठकों और नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिए उपलब्ध समय को कम कर देता है।

▸▸संस्थागत बाधाएं: औपचारिक संस्थाएं और सहायता प्रणालियां अक्सर महिलाओं की आवश्यकताओं को समायोजित करने में विफल रहती हैंए परिणामस्वरूप उनकी भागीदारी दर कम हो जाती है। समूहों या संगठन द्वारा अनुपयुक्त समय पर आयोजित बैठकों में भी महिलाएं सम्मिलित नहीं हो पाती हैं। बैठकों का स्थान पुरुष प्रधान होता है जैसे गांव की चौपाल या चाय की दुकानें महिलाओं की उपस्थिति को हतोत्साहित करती हैं। प्रशिक्षण और बैठकों के दौरान अक्सर लिंग-संवेदन शील सुविधाओं की कमी होती है।

सूचनाओं एवं आत्मविश्वास अंतराल

तकनीकी से दूरी के कारण महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी लगती है जो उनकी नेतृत्व क्षमता को कम करता है।

आईए हम सब मिलकर प्रयास करें कि हमारे, समाज, समुदाय और परिवार की महिलाओं को ऐसा वातावरण प्रदान करें कि वो इन सभी बाधाओं को पर करके आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें और अपने, परिवार के, समाज, समुदाय एवं देश के विकास में सशक्त भूमिकाओं में उच्च स्तर की नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करें।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सफल महिला कृषक सम्मानित

धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा जिले की प्रगतिशील महिला कृषकों को सम्मानित करने के साथ-साथ उन्हें उन्नत कृषि तकनीकों का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस. एस. चौहान ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जी.एस. मोहनिया उप संचालक, कृषि विभाग, धार उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. चौहान ने जिले के विभिन्न

विकासखंडों से आई सफल महिला किसानों का शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया। उन्होंने कहा कि केंद्र का लक्ष्य महिलाओं को केवल पारंपरिक खेती तक सीमित न रखकर उन्हें बीज उत्पादन और नर्सरी प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में दक्ष बनाना है। श्री मोहनिया ने कहा कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी केवल श्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि वे अब कृषि प्रबंधन और निर्णय लेने में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। प्रशिक्षण सत्र में महिला कृषकों को डॉ. अंकिता पाण्डेय, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं डॉ. डी.एस. मण्डलोई, तकनीकी अधिकारी द्वारा उन्नत बीज तकनीक, बीज उपचार एवं घर पर ही बीजों के संधारण की विधि पर जानकारी दी गई। कार्यक्रम में भूपेन्द्र कुमार कुर्मी, गौरव सारस्वत, जितेन्द्र नायक, गणेश निंगवाल, जीवन निंगवाल और विशेष नलवाया ने विशेष सहयोग किया।

केवीके में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार के मार्गदर्शन में ग्राम हसगोरा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. एस.के. जाटव द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बारे में बताया गया साथ ही कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु सरकारी योजनाओं के प्रति जागरुक करना है। केंद्र के जयपाल छिगारहा ने किचिन गार्डन लगाने की विस्तृत जानकारी दी जिससे महिलाओं का स्वास्थ्य सुदृढ़ किया जा सके। उपरोक्त कार्यक्रम में 27 महिलाए एवं अन्य कृषक उपस्थित रहे।

मसूर पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

अनूपपुर। कृषि विज्ञान केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय द्वारा संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (दलहन) कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम बेला, विकासखंड जैतहरी में मसूर फसल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रगतिशील कृषक तीरथ राठौर एवं शिवनारायण राठौर के खेत में आयोजित किया गया, जिसमें आसपास के अनेक किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर कोटा मसूर-4 किस्म की उन्नत उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. एस. के. पाण्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख ने बताया कि मसूर की अधिक उपज के लिए उन्नत किस्मों का चयन, समय पर बुवाई तथा बीज उपचार अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने किसानों को मसूर फसल में संतुलित पोषण प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण तथा रोग-कीट प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संदीप चौहान, विशेषज्ञ (कृषि प्रसार) ने कहा कि इस प्रदर्शन में कोटा मसूर-4 किस्म, बीज उपचार, तथा नैनो जिंक 100 मिली और नैनो कॉपर 100 मिली प्रति एकड़ के छिड़काव जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाया गया है, जो फसल की बढ़वार एवं उत्पादन बढ़ाने में सहायक हैं। उन्होंने किसानों को परंपरागत मसूर खेती की तुलना में उन्नत तकनीकों के लाभों के बारे में भी जानकारी दी।

मप्र के किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा ACE ट्रैक्टर

सिलवानी। ट्रैक्टर उद्योग जगत में तेजी से बढ़ रही एक्शन कन्स्ट्रक्शन इक्विप्मेंट लिमिटेड (ACE)के ट्रैक्टर मध्य प्रदेश के बरेली, उदयपुरा, शाहगंज, सिलवानी क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। यह ट्रैक्टर खेती के कार्यों के अलावा ढुलाई के काम में भी सबसे ज्यादा असरदार है। ष्टश्व बरेली के डीलर श्री तेज प्रताप दुबे ने इस क्षेत्र के किसानों का ACE ट्रैक्टर स्नेह देने के लिये किसान आभार व्यक्त किया है।

श्री दुबे ने बताया की ट्रैक्टर के विक्रय के पश्चात किसानों को समुचित सर्विस देने का हमारा पूरा फोकस रहता है। इस इस क्षेत्र में हमारे दो मॉडल DI 65 चेतक 2WD/4WD वैरिएंट (60 HP श्रेणी) और 450 NG (47 HP श्रेणी) किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। DI 65 चेतक मॉडल में 4088 सीसी का दमदार इंजन लगाया गया है। श्री दुबे ने बताया कि हमारे पास किर्लोस्कर इंजन में भी वेरिएंट उपलब्ध है। साथ ही इसमें 4 सिलिंडर का इंजन लगा हुआ है। पॉवर स्टीयरिंग और साइड गियर होने की वजह से इसका परिचालन अत्यधिक सुगम है। ACE ट्रैक्टर की कार्य क्षमता को देखते हुए किसान इसे ज्यादा पसंद कर रहे हैं। साथ ही कंपनी के पास 15 हार्स पावर से लेकर 90 हार्स पावर तक ट्रैक्टर की विशाल रेंज है, जिसमें 2/4 WD VARIANT में उपलब्ध है। कंपनी किसानों को आधुनिक फीचर्स से युक्त स्वदेशी ट्रैक्टर उपलब्ध करने के लिए बचनबद्ध है। ACE ट्रैक्टर पूर्णत: स्वदेशी है जिनमे सारे अत्याधुनिक फीचर्स उपलब्ध है। ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषताओं में दमदार पावर स्टिरिंग का विकल्प भी उपलब्ध है। इनमें प्रमुख रूप से कान्स्टेन्ट मेष गियर, ड्यूल क्लच, तेल में डुबे हुए ब्रेक्स, एडवान्स हइड्रोलिक्स सिस्टम, साइड सिफ्टिंग गियर जैसी सुविधाएं उपलब्ध है। ACE ट्रैक्टर में बड़ा इंजन है जिससे इसकी की लाइफ ज्यादा समय बढ़ जाती है और कम डीजल खपत के साथ ज्यादा खिंचाई ज्यादा हो सके। रायसेन जिले में ट्रैक्टर को काफी पसंद किया जा रहा है। श्री दुबे ने बताया कि नवरात्रि के उपलक्ष्य में किसान एग्री सॉल्यूशन शिवा गार्डन के बगल में बरेली में ऑफर भी रहेंगे, जिसके लिए किसान भाई संपर्क कर सकते हैं।

नरेन्द्र भीमावद जियोलाइफ के डिप्टी जोनल सेल्स मैनेजर नियुक्त

इंदौर। जियोलाइफ एग्रीटेक इंडिया प्रायवेट लिमिटेड ने श्री नरेन्द्र भीमावद को कंपनी का डिप्टी जोनल सेल्स मैनेजर नियुक्त किया है। आपने 2 मार्च को नवीन कार्यभार ग्रहण कर लिया है। श्री नरेन्द्र भीमावद को कीटनाशक उद्योग में सेल्स प्रमोशन का 15 वर्षों का सुदीर्घ अनुभव है। आपने बी.ए.एस.एफ. जैसी मल्टीनेशनल कंपनी में भी सेवायें दी है। मध्यप्रदेश के डीलर्स एवं किसानों से श्री भीमावद का सतत संपर्क है।

पीएम किसान सम्मान निधि की 22वीं किस्त का किसानों ने देखा सीधा प्रसारण

शिवपुरी। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 22वीं किस्त का सीधा प्रसारण कृषि विज्ञान केंद्र शिवपुरी में किसानों को दिखाया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने असम के गुवाहाटी से देश के किसानों के खातों में सम्मान निधि की राशि हस्तांतरित की।

महिंद्रा ने 1000वें हार्वेस्टर का किया रोल-आउट

पीथमपुर। महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के फार्म मशीनरी व्यवसाय ने पीथमपुर स्थित अपने निर्माण संयंत्र में महिला कर्मचारियों के योगदान का सम्मान किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में कंपनी ने अपने कर्मचारियों की उपलब्धियों को सराहा।

इसी दौरान पीथमपुर प्लांट ने एक महत्वपूर्ण उत्पादन उपलब्धि भी हासिल की। संयंत्र से 1000वें हार्वेस्टर का सफलतापूर्वक रोल-आउट किया गया। यह उपलब्धि संयंत्र में उत्पादन शुरू होने के बाद से इसके तेजी से बढ़ते संचालन और उत्पादन क्षमता को दर्शाती है।

कंपनी के अनुसार, पीथमपुर प्लांट में वर्तमान में 40 से अधिक महिला पेशेवर विभिन्न तकनीकी और प्रशासनिक भूमिकाओं में कार्यरत हैं। महिंद्रा का उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना और एक समावेशी कार्यस्थल का निर्माण करना है।

पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र में स्थित यह संयंत्र महिंद्रा की पहली समर्पित फार्म मशीनरी निर्माण इकाई है, जिसकी शुरुआत वर्ष 2022 में हुई थी। मजबूत सप्लायर नेटवर्क के साथ स्थापित यह प्लांट टिकाऊ, उच्च गुणवत्ता वाली और किफायती कृषि मशीनरी का निर्माण करता है। यहां निर्मित उत्पादों का विपणन महिंद्रा और स्वराज ब्रांड के तहत किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कंपनी ने मुंबई, नागपुर, रुद्रपुर, ज़हीराबाद और जयपुर स्थित अपने अन्य विनिर्माण संयंत्रों में भी महिला कर्मचारियों के साथ विशेष कार्यक्रम आयोजित किए।

इफको का तीन दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

रायपुर। इफको द्वारा इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के कृषक नगर स्थित विस्तार सेवाएँ संचालनालय में 27 फरवरी से 01 मार्च 2026 तक तीन दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में विभिन्न जिलों से आए किसानों ने भाग लेकर आधुनिक खेती की तकनीकों, संतुलित उर्वरक प्रबंधन और नैनो उर्वरकों के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम के पहले दिन विशेषज्ञों ने किसानों को मिट्टी परीक्षण, संतुलित खाद उपयोग और वैज्ञानिक खेती के तरीकों के बारे में बताया। दूसरे दिन किसानों को कृषि अभियांत्रिकी एवं संरक्षित उद्यानिकी विभाग का भ्रमण कराया गया, जहां आधुनिक कृषि यंत्रों और पॉलीहाउस व शेडनेट जैसी तकनीकों की जानकारी दी गई। तीसरे दिन समापन सत्र में कीट एवं रोग प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन तथा नैनो उर्वरकों के उपयोग पर विस्तार से जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने किसानों को नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक और अन्य उत्पादों के सही उपयोग के बारे में भी बताया। किसानों ने बताया कि इस प्रशिक्षण से उन्हें नई तकनीकों को समझने और खेती में उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा मिली।

मधुमक्खी पालन सेमीनार आयोजित

दतिया। कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया द्वारा राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद उत्पादन योजनांतर्गत एक दिवसीय जिला स्तरीय सेमीनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. पाण्डे, अधिष्ठाता रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों को संबोधित करते हुये कहा कि किसान भाई अपनी आय में वृद्धि के लिये परम्परागत कृषि के साथ मधुमक्खी पालन, मछली पालन एवं पशुपालन का कार्य अवश्यक करें जिससे उनकी आमदनी में एक अतिरिक्त आय जुड़ सके।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे रामनरेश यादव, अध्यक्ष जिला कृषि स्थाई समिति ने कहा कि किसान हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है इसलिये किसान भाई शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ हैं और उनका सदुपयोग करते हुये अपनी आय में बढ़ोत्तरी करें। विशिष्ट अतिथि प्रीति अहिरवार दतिया कृषि स्थाई समिति दतिया अध्यक्ष ने ऐसे एक-दो कार्यक्रम जिले में और कराने की बात कही।

अल्ट्राटेक सीमेंट की पहल से ग्रामीण महिलाओं को मिल रहे आजीविका के नए अवसर

मैहर। मैहर क्षेत्र के ग्रामीण गांवों में अल्ट्राटेक सीमेंट के सहयोग से चल रही एक सामुदायिक आजीविका पहल ग्रामीण महिलाओं और छोटे किसानों के लिए नए अवसर लेकर आ रही है। इस पहल का संचालन लोक कल्याण भूमिका समिति द्वारा किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य कौशल विकास, टिकाऊ कृषि पद्धतियों और आय के नए स्रोतों के माध्यम से ग्रामीण परिवारों की आजीविका को मजबूत करना है। यह पहल वर्तमान में मैहर क्षेत्र के चार गांवों में संचालित की जा रही है, जहां विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रोत्साहित किया जा रहा है।

परियोजना के अंतर्गत ऑयस्टर मशरूम उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस गतिविधि के तहत 150 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया है तथा दो मशरूम हटमेंट स्थापित किए गए हैं। यहां महिलाएं मशरूम उत्पादन की पूरी प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रशिक्षण ले रही हैं। कम लागत और कम जगह में होने के कारण मशरूम उत्पादन ग्रामीण महिलाओं के लिए आय का एक अच्छा विकल्प बनकर उभर रहा है।

परियोजना के अंतर्गत अजोला उत्पादन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए 30 किसानों के यहां अजोला बेड बनाए जा रहे हैं, जो पशुओं के लिए पौष्टिक चारा के रूप में उपयोगी है और किसानों को महंगे पशु आहार पर निर्भरता कम करने में मदद करता है। यह पहल अल्ट्राटेक सीमेंट के सहयोग से संचालित हो रही है और परियोजना का मार्गदर्शन निमेष राज, डेप्यूटी मैनेजर- सीएसआर अल्ट्राटेक मैहर, द्वारा किया जा रहा है। वहीं जमीनी स्तर पर इसका क्रियान्वयन लोक कल्याण भूमिका समिति की अध्यक्ष रेखा कुशवाहा के नेतृत्व में किया जा रहा है।

उपयोगी दुधारू गायों की नस्लें

● डॉ. अशोक सिंह
पूर्व प्राध्यापक एवं प्रभारी
पशु अनुवांशिकी एवं अभिजनन विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू (म.प्र.)

भारत वर्ष में पाये जाने वाले कुल पशुओं की संख्या का लगभग 65 प्रतिशत भाग गोवंशीय व भैंस वंशीय पशुओं का है। देश में इन पशुओं का इतना बड़ा समुदाय होते हुए भी विश्व के कुल दुग्ध उत्पादन की तुलना में इन पशुओं का योगदान मात्र 10 प्रतिशत हैं।

यद्धपि दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है। देश की जनसंख्या को देखते हुये प्रति व्यक्ति को मात्र 160 से 180 ग्राम दूध मिल पाता है जबकि पोषण सलाहकार समिति के अनुसार कम से कम 285 ग्राम दूध प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन मिलना ही चाहिये। इसी संदर्भ में जब हम मध्यप्रदेश में गो-पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता की ओर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश का भारत में छटवां स्थान है और 6 से 8 प्रतिशत है। ऐसी परिस्थितियों में प्रदेश की जनता को दुग्ध प्रदाय करने हेतु हमें एक लम्बा रास्ता तय करना हैं। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि प्रदेश में पाई जाने वाली गायों की नस्लों व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने सम्बंधी प्रयासों का अवलोकन किया जावे। मालवी, कैनकथा व निमारी नामक गोवंशीय नस्लें मध्यप्रदेश में पायी जाती हैं परंतु वास्तव में यह नस्लें इनमें से मालवी व कैनकथा जोतयोग्य नस्लें हैं तथा निमारी सामान्य उपयोगी प्रादेशिक महत्व की नस्ल हैं।

प्रदेश में पाई जाने वाली नस्लें-

मालवी:- इस नस्ल के गो-पशु ज्यादातर (मालवा क्षेत्र) (उज्जैन, इदौंर, देवास, शाजापुर, सिहौर व भोपाल) व उसके आस-पास पाये जाते हैं। इस नस्ल की गायों का औंसत दुग्ध उत्पादन 600 से 700 किलो प्रति ब्यात पाया गया हैं। इस नस्ल के बैल खेती में काम आने के अतिरिक्त बैलगाड़ी आदि में बोझा ढोने के लिये बहुत अच्छे समझे जाते हैं। इनकी छोटी, मजबूत व कड़े खुर इन्हें खेती में काम करने व बोझा ढोने के लिये उपयुक्त बनाते हैं। शाजापुर के अगारपुरा में मध्यप्रदेश का मालवी-प्रजनन प्रक्षेत्र हैं। मालवी नस्ल की गायों के एक अध्ययन से निम्न जानकारी प्राप्त हुई है।

गुण	औसत
जन्म पर भार (किलो)	19
प्रथम ब्यात की उम्र (दिन)	1530
गर्भ धारण अवधि (दिन)	277
प्रथम ब्यात का उत्पादन (किलो)	638
दूध देने की अवधि (दिन)	268
सूखा रहन के दिन	220
सर्विस पीरियड (दिन)	234

कैनकथा:- इस नस्ल के गो पशु मध्यप्रदेश के उत्तरी पूर्व भाग, केननदी के किनारे पन्ना जिले में (पवई), अजयगढ़ व छतरपुर के आस-पास पाये जाते हैं। इस नस्ल के पशुओं का शरीर छोटा, गहरा व सधा हुआ होता है। पीठ सीधी, सपाट माथा, छोटा व चौड़ा सिर तथा गले की लटकन मध्यम आकार की होती है। नर पशुओं का औसत भार 344 किलों तथा मादा का 295 किलों होता है। इस नस्ल के बैल भी काफी मजबूत होते हैं इसी कारण खेती व बोझा ढोने के काम आते हैं।

निमारी:- इस नस्ल के गौपशु नर्मदा घाटी के किनारे पाये जाते हैं। जिनमें मुख्य रूप से हरदा, खंडवा (बुरहानपुर), धार, निमाड़ व पश्चिमी खरगौन जिलों के कुछ हिस्से आते हैं। सिर लम्बा, माथा उभरा हुआ तथा सींग पीछे की और उभरते हुये इन पशुओं की विशेष पहचान हैं। शरीर का रंग लाल या गेरूआ होता हैं तथा शरीर पर बड़े-बड़े सफेद चकत्ते पाये जाते हैं। इन पशुओं का वार्षिक दुग्ध उत्पादन 450 से 500 किलों मापा गया हैं। नर पशुओं का औसत शारीरिक भार 390 किलो तथा मादा का 320 किलों होता है। शासकीय गोवंशीय प्रजनन प्रक्षेत्र रोड़िया में निमारी नस्ल की गायें रखी गयी हैं।

मध्यप्रदेश में पहले जो प्रजनन नीति बनाई गई थी उसका मुख्य लक्ष्य खेती व आवागमन सें उपयोगी पशुओं का उत्थान करना था परंतु बाद में यह विचार किया गया कि प्रदेश दुग्ध उत्पादन को प्राथमिकता दिया जाना अति आवश्यक है, अत: नत्संबधी कई योजनायें कार्योन्वित की गई। इस समय प्रदेश में गाय भैंसों के जो प्रजनन प्रक्षेत्र हैं उनमें प्रादेशिक नस्लों के अलावा दूध का उत्पादन बढ़ाने हेतु थारपाकर, साहीवाला व हरियाणा नस्ल की दुधारू गायें भी रखी गई हैं। यद्धपि ये नस्लें मध्यप्रदेश की नहीं हैं परंतु इन्हें देश की अच्छी दुधारू नस्लें माना जाता हैं। शासकीय प्रक्षेत्रों में शुद्ध प्रजनन के साथ-साथ संकर प्रजनन हेतु 'जर्सी' नामक विदेशी नस्ल का भी उपयोग किया जा रहा है। भैंसों में मुरी नस्ल को पूरे प्रदेश में उपयोग में लाया जा रहा हैं।

देश में पाई जाने वाली प्रमुख दुधारू गोवंशीय नस्लों के प्रमुख लक्षणों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा हैं।

साहीवाल:- इस नस्ल का मूलनिवास पाकिस्तान में है। दुधारू गायों में यह सर्वोत्तम मानी जाती है यह गायें अंजोरा(दुर्ग) डेरीफार्म में रखी गई हैं। इनका रंगभूरा लाल या घूसर होता है। कभी-कभी उसमें सफेद चित्तियां भी पाई जाती हैं। ये गायें सुदृढ़ लम्बी एवं मांसल होती हैं तथा इसकी त्वचा मुलायम व चमकीली होती हैं। पशुओं का माथा चौड़ा तथा शरीर भारी होता हैं। सींग छोटे ठूंठ के समान होते हैं। लम्बी पूंछ बड़ा ऐन, झूलता हुआ गलकम्बल एवं सघन कूबड़, इनकी पहचान के मुख्य लक्षण माने जाते हैं। इन जाति की गायों का दूध 300 दिन की अवधि में औसतन 1200 से 2500 किलों तक होता है, यद्धपि 3000 किलो में अधिक उत्पादन की गायें भी पाई जाती हैं। अंजोर प्रक्षेत्र (दुर्ग) की साहीवाल गायों के एक अध्ययन से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई है।

प्रथम ब्यात की उम्र-	1460 दिन
औसत दुग्ध उत्पादन-	1880 किलों
दूध देने की अवधि-	321 दिन
सूखा रहने की अवधि-	115 दिन

थारपारकर:- इस जाति के पशु राजस्थान के शुष्क अथवा अर्द्ध शुष्क स्थानों में पाये जाते हैं। प्रदेश में यह पशु रतौना प्रक्षेत्र (सागर) में उपलब्ध है इनका आकार मध्यम एवं शरीर सुगठित होता है पशुओं का चेहरा लम्बा एवं माथा उभरा हुआ रहता है। सींग छोटे, मुड़े हुये, कान लटकते हुये, रंग सफेद एवं युवा पशुओं में रीढ़ के समानान्तर सफेद अथवा हल्के भूरे रंग की लकीर दिखाई पड़ती है। सामान्य दशाओं में इस जाति की गायें औसतन एक ब्यात में 800 से 1500 लीटर दूध देती है। मध्यप्रदेश के रतौना (सागर) प्रक्षेत्र की थारपारकर गायों के अध्ययन से नीचे लिखी जानकारी प्राप्त हुई है:-

प्रथम ब्यात की उम्र-	1597 दिन
औसत दूध उत्पादन-	1024 किलो
दूध देने की अवधि-	273 दिन
सूखा रहने की अवधि-	181 दिन

हरियाणा:- इस जाति का मूल निवास स्थान हिसार, करनाल, देहली, रोहतक तथा गुड़गांव है। मध्यप्रदेश में ये भिंड व ग्वालियर संभाग में पाई जाती है तथा इटारसी प्रक्षेत्र में हरियाणा नस्ल की गायें रखी गई हैं। इनका चेहरा-लम्बा और सकरा, माथा चपटा तथा ऊपरी के केन्द्र में अस्थि उभार दिखता है। सींग छोटे तथा मुड़े हुयें, कान सीधे एवं छोटे तथा शरीर लम्बा होता है। मांसल पैर हरियाणा जाति में प्रमुखता से पाई जाती है। इस जाति के बैल उत्तम एवं तेज चलने वाले होते है।

उत्पादन के आधार पर सांडों का चुनाव ही मुख्य विधि है किंतु इसके लिये जिस प्रकार की योजना तथा सुविधायें आवश्यक हैं वह शासकीय स्तर पर उपलब्ध नहीं है। इन विधियों का उपयोग करके यदि प्रदेश में प्रति ब्यात 1400 लीटर दूग्ध उत्पादन क्षमता वाली 40 लाख गायें योजना बद्ध तरीके से पैदा की गई तो प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दुग्ध आवश्यकता जो 284 ग्राम आंकी गई इसकी पूर्ति करने का सपना पूरा हो सकेगा।

उपयुक्त तालिका को देखने से यह स्पष्ट होता हैं कि उन्नत किस्म की गायों एवं सांड़ों के प्रयोग से प्रति ब्यात दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है अर्थात लगभग 280 दिनों में औसतन 1400 लिटर दूध प्रति पशु (अथवा 5 लीटर प्रति पशु प्रतिदिन) प्राप्त किया जा सकता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिये देशी नस्लों में क्षमता वाली साहीवाल, थारपारकर हरियाणा गायें तथा मुर्रा भैंस व जर्सी से संकरित वर्ण-संकर गायों की संख्या बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है जिन क्षेत्रों में अधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता वाले जर्सी सांड न उपलब्ध हों वहां दुग्ध उत्पादकता के लिये चुने हुये साहीवाल थारपारकर या हरियाणा सांडों को कृत्रिम रेतन में उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रजनन में चुने हुये योग्य वर्ण संकर सांडों के उपयोग की भी आवश्यकता है। मध्यप्रदेश में भैंसों की अच्छी नस्ल उपलब्ध न होने के कारण मुर्रा नस्ल का विस्तार भी जरूरी हैं। दुग्ध उत्पादन क्षमता के आधार पर उपरोक्त नस्लों के सांडों के चुनाव व उनका दुधारू बछिया पैदा करने में उचित उपयोग ही दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की कुन्जी है। अभी मध्यप्रदेश में दुग्ध उत्पादन क्षमता के आधार पर सांडों के चुनाव करने के लिये सही वैज्ञानिक प्रणालियों का आरम्भ नहीं हुआ है। प्रोजनी टेस्टिंग अथवा संतति के उत्पादन आधार पर सांडों का चुनाव ही मुख्य विधि है किंतु इसके लिये जिस प्रकार की योजना तथा सुविधायें आवश्यक है वह शासकीय अथवा अशासकीय स्तर पर उपलब्ध नहीं है। इन विधियों का उपयोग करके यदि प्रदेश में प्रति ब्यात 1400 लिटर दुग्ध उत्पादन क्षमता वाली 40 लाख गायें योजना बद्ध तरीके से पैदा की गई तो प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दुग्ध आवश्यकता जो 284 ग्राम आंकी गई हैं, की पूर्ति करने का सपना पूरा हो सकेगा।

संकर नस्ल	एक ब्यात में उत्पादन (लि.)	दुग्ध उत्पादन (दिन)	पशु के सूखा रहने के दिन	जन्म पर भार (कि.)	प्रथम ब्यात पर वर्ष	उम्र माह
सहीवाल+जरसी	1610	277	123	24.0	2	4
हरियाणा+जरसी	1214	308	170	19.0	2	3
थारी+जरसी	1356	274	69	20.0	2	0
मालवी+जरसी	848	287	84	15.8	2	8
मुर्रा	1357	306	276	25.9	4	2

प्रसंस्करणः ग्रामीण युवाओं के लिये कृषि उद्यम

• चन्द्रजीत सिंह • किंजल्क सी. सिंह • राजेंद्र सिंह ठाकुर
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

विगत 70 वर्ष कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में स्वर्णिम परिवर्तन के रहे हैं। नवीन, विकसित और अधिक उत्पादन वाली किस्मों के कारण जहां कृषि में सैद्धांतिक बदलाव आए हैं, वहीं सिंचाई और उर्वरकों के प्रति किसानों की बढ़ती जागरूकता के कारण उन्नत कृषि व्यावहारिक रूप से संभव हो सकी है।

विज्ञान, किसान तकनीकी एवं आवश्यक आदानों की उपलब्धता के मिले-जुले प्रयासों से आज हम देश की विशाल जनसंख्या को भरपूर भोजन देने में सक्षम हैं। साथ ही साथ हमारे पास भविष्य में दुर्भिक्ष एवं अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय अनाज की आपूर्ति हेतु पर्याप्त खाद्यान्न भंडारित है। इसका उदाहरण कोविड-19 जैसी भयानक महामारी के समय हम देख चुके हैं। समस्त सरकारी योजनाओं द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि देश में कोई भी व्यक्ति या नागरिक भूखा न रहे। देश की प्रमुख फसलों के रकबे एवं कुल उत्पादन पर एक नजर डालने से फसलोत्पादन के बारे में आत्मनिर्भरता का भान हो जाता है।

स्रोतः पीआईबी

फसल	क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर में)	उत्पादन (लाख टन में)
गेहूं	298	1062.1
चावल	437.9	1174.7
दलहन	लगभग 290	230.2
तिलहन	266.7	341.9

भारत में आजीविका का सबसे बड़ा साधन होने के बावजूद कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण प्रतिशत अत्यंत कम है। औद्योगिक रूप से लगभग 10 प्रतिशत से भी कम कृषि उत्पाद ही प्रसंस्कृत होते हैं। चीन के बाद भारत ही सबसे ज्यादा फल एवं सब्जियां उगाने वाला देश है, परंतु इस उत्पादन का मात्र 2 प्रतिशत भाग ही प्रसंस्कृत हो पाता है। इसी तरह 35 प्रतिशत दूध, 8 प्रतिशत समुद्री उत्पाद तथा 6 प्रतिशत कुक्कुट उत्पादन का प्रसंस्करण हो पाता है। यदि वर्ष 2030 तक प्रसंस्कृत उत्पादों का प्रतिशत बढ़ाकर 15 किया जा सके तो ग्रामीण रोजगार के नए अवसर प्राप्त हो सकेंगे, साथ ही साथ कृषि उत्पादों को नष्ट होने से भी रोका जा सकेगा। ग्रामीण स्तर पर कृषि उत्पाद प्रसंस्करण की कई इकाइयां स्थापित की जा सकती हैं, जैसे कि दाल मिल, चावल मिल, खाद्य तेल मिल आदि। सामान्यतः उपरोक्त उद्योगों हेतु आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति अथवा प्राप्ति का प्रवाह निम्नानुसार होता है।

कृषि उत्पाद विक्रय के तीन प्रकार

कृषि उत्पादों की बिक्री के तीन तरीके सामान्य प्रचलन में हैं।

▸▸ मध्यप्रदेश में मुख्य कृषि उत्पाद मंडियों के द्वारा भेजा जाता है, जिसमें नीलामी के द्वारा उत्पाद का मूल्य तय किया जाता है। परंतु इसमें किसान अपने उच्च गुणवत्ता के उत्पाद का सही मूल्य नहीं प्राप्त कर पाता है तथा इसमें दलालों एवं मध्यस्थों की मुख्य भूमिका एवं मुनाफा रहता है।

▸▸ दूसरा तरीका सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं की मदद से अपने उत्पाद को बेचने का है। सरकारी एवं गैर सरकारी सहकारी संस्थाओं में बिक्री के द्वारा किसान अपने उत्पाद का बेहतर मूल्य पाता है।

▸▸ तीसरा एवं प्रभावी तरीका है अनुबंध खेती। इसमें अनुबंध करने वाली संस्था एवं किसान आपसी सहमति से फसल के दाम तय कर अनुबंध करते हैं। इसमें क्रय करने वाली संस्था/व्यापारी ही खेती के लिए आवश्यक आदानों की आपूर्ति करती है एवं उत्पाद की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करती है। किसान की भूमिका केवल फसल प्रबंधक के रूप में रहती है। इसे गेट परचेज कहा जाता है, जो मुख्यतः ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया एवं कनाडा में अपनाई जाती है। भारत में मुख्यतः पंजाब में इसका चलन प्रारंभ हुआ। वर्ष 2020 में सरकार ने अनुबंध खेती के लिए कानून बनाया है, ताकि किसानों के हित में कानूनी रूप से काम हो सके।

वर्तमान परिस्थितियों में सहकारी संस्थाओं द्वारा कृषि उत्पादों का विक्रय दोनों के लिए ही लाभदायक है, क्योंकि जहां एक ओर किसान को अपने उत्पाद का उचित मूल्य मिल सकेगा, वहीं दूसरी ओर प्रसंस्करणकर्ता को भी भंडारण एवं कच्चे माल की कमी की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दाल मिल कच्चे माल की आपूर्ति

अरहर, चना, मसूर, मूंग, उड़द आदि मुख्य दलहनी फसलें हैं। दलहनी फसलें खरीफ एवं रबी दोनों मौसम में उगाई जाती हैं। जहां पानी की उपलब्धता होती है, वहां जायद के मौसम में भी दलहनी फसलों की खेती की जाती है। दलहनी फसलों का बाजार असंगठित है, इसलिए स्थानीय तौर पर सजग रहते हुए दलहनी फसलों की खरीद करनी चाहिए।

दाल मिलों को वर्षभर चलाने के लिए विभिन्न फसलों का प्रासिकरण निम्नानुसार करना चाहिए

माह	दाल मिल में किए जाने वाले प्रसंस्करण कार्य
जनवरी	तुअर
फरवरी	सफाई कार्य
मार्च	चना
अप्रैल	तुअर
मई	मूंग
जून	मसूर
जुलाई एवं अगस्त	राजमा
सितंबर	मटर
अक्टूबर	सफाई कार्य
नवंबर	उड़द, मूंग, सोयाबीन
दिसंबर	अरहर

दालों के प्रसंस्करण में प्रयुक्त मशीनों में नवीन तकनीकी के अनुसार प्राप्त की हुई दाल के अनुसार बदलाव किया जा सकता है। दलहनी फसलों की कटाई के तुरंत बाद दालें बाजार में विक्रय हेतु आ जाती हैं तथा थोक बिक्री हेतु उपलब्ध रहती हैं। दाल मिल की क्षमता, बाजार की मांग और संभावित लाभ को दृष्टिगत रखते हुए प्रसंस्करणकर्ता को कच्चा माल संग्रहित करना चाहिए। कम कीमतों पर उपलब्धता के कारण प्रसंस्कृत उत्पादों में लाभ का अनुपात बढ़ जाता है। सामान्यतः दालों के एक बैच के प्रसंस्करण में 4 से 5 दिन का समय लगता है। दालों के प्रसंस्करण में निम्नलिखित मुख्य चरण होते हैं-

▸▸ ऊपरी आवरण या छिलका हटाना
▸▸ दाने को दो भागों में विभक्त करना
▸▸ दाने की पॉलिश करना ▸▸ पैकेजिंग करना

दाने से दाल बनाने का अनुपात लगभग 71 प्रतिशत होता है। शेष बचा हुआ माल जानवरों हेतु प्रोटीन युक्त आहार बनाने के काम में आता है अथवा मुर्गियों के लिए आहार के रूप में बेचा जा सकता है। इसके उप-उत्पादों के विक्रय से भी काफी अच्छा मुनाफा अर्जित किया जा सकता है।

चावल मिल कच्चे माल की आपूर्ति

चावल मिल हेतु कच्चा माल धान होता है। पूरे विश्व में धान की लगभग 1,20,000 किस्में उगाई जाती हैं। धान सामान्यतः साल में दो मौसम-रबी एवं खरीफ-में लगाया जाता है। खरीफ फसल नवंबर-दिसंबर में कटती है और इस समय धान की आवक तुलनात्मक रूप से ज्यादा होती है। कटाई से लेकर जनवरी तक बाजारों में धान की उपलब्धता बनी रहती है, जबकि रबी फसल अप्रैल में तैयार होती है एवं कटाई से लेकर जून तक विपणन हेतु किसानों द्वारा बाजार में उपलब्ध कराई जाती है।

देशी किस्मों में धान से चावल बनाने का अनुपात लगभग 65-67 प्रतिशत, जबकि संकर किस्मों में लगभग 60-62 प्रतिशत होता है। सामान्यतः एक चावल मिल वर्ष में 9 महीने कार्य करती है।

चावल मिल का वार्षिक कैलेंडर

माह	चावल मिल में किए जाने वाले कार्य
जनवरी	धान से चावल बनाना
फरवरी	धान से चावल बनाना
मार्च	सफाई
अप्रैल	धान से चावल बनाना
मई	धान से चावल बनाना
जून	धान से चावल बनाना
जुलाई	धान से चावल बनाना
अगस्त	धान से चावल बनाना
सितंबर	सफाई
अक्टूबर	पोहा, मुरमुरा
नवंबर	धान से चावल बनाना
दिसंबर	धान से चावल बनाना

धान प्रसंस्करण की मुख्य प्रक्रिया इस प्रकार होती है-

▸▸ धान की सफाई
▸▸ धान की भूसी हटाना (डी-हस्किंग)
▸▸ चावल को पॉलिश करना
▸▸ चावल की ग्रेडिंग और पैकिंग

धान के प्रसंस्करण के पश्चात तीन प्रकार के अंतिम उत्पाद तैयार होते हैं- चावल का दाना, चावल की भूसी और चावल की ब्रान। चावल के साबुत दाने और टूटे दाने भी प्राप्त होते हैं। धान से चावल बनने का अनुपात 60-65 प्रतिशत है, अर्थात 100 किलो धान से 60-65 किलो चावल तैयार होता है। प्रसंस्करण में 2 दिन का समय लगता है तथा तैयार उत्पाद को कारखाने में 5 से 10 दिन के लिए रखा जा सकता है। इन तीनों उत्पादों की बाजार में उचित मांग होती है। केवल चावल की ब्रान को तेल निकालने की मिल में बेचने से अधिक फायदा होता है।

तेल मिल कच्चे माल की आपूर्ति

▸▸ तेल मिलें मुख्यतः दो इकाइयों के रूप में काम करती हैं
▸▸ कच्चा तेल निकालने वाली मिलें
▸▸ कच्चे तेल को शुद्ध करने वाली मिलें
▸▸ कच्चा तेल निकालने वाली मिलें अपना उत्पाद रिफाइनरी को भेज सकती हैं।

तिलहनों की वार्षिक उपलब्धता सामान्यतः निम्नानुसार बनी रहती है-

माह	तेल मिल में किए जाने वाले कार्य
जनवरी	कपासिया, सागौन, नीलगिरी
फरवरी	साफ-सफाई एवं रखरखाव
मार्च	करड़ी
अप्रैल	तिल और सोयाबीन
मई	सरसों
जून	सूर्यमुखी एवं रामतिल
जुलाई	नारियल
अगस्त	साफ-सफाई एवं रखरखाव
सितंबर	आम (स्पर्म ऑयल)
अक्टूबर	--
नवंबर	सोयाबीन, मूंगफली, सूर्यमुखी एवं रामतिल
दिसंबर	--

तेल मिलों के दो अंतिम उत्पाद होते हैं- पहला कच्चा तेल और दूसरा खली, जिसे डी.ओ.सी. भी कहते हैं। खली को जानवरों के पूरक भोजन के तौर पर उपयोग किया जाता है तथा इसके निर्यात की संभावनाएँ भी रहती हैं। परंतु यदि इसे रसायनों द्वारा उपचारित किया जाएगा तो यह निर्यात के मानकों के अनुरूप नहीं रहेगा। अतः खली को सुखाकर ही बेचना चाहिए।

कच्चा तेल निकालने में लगभग 2 दिन का समय लगता है तथा तेल के शुद्धिकरण में 5 दिन। इस प्रकार कुल प्रसंस्करण समय लगभग सात दिन का होता है। मिल में तैयार उत्पाद को 4 दिन के अंदर पैक कर देना चाहिए।

कई बड़े ब्रांड वाली कंपनियाँ छोटी मिलों से कच्चा तेल खरीद कर स्वयं शुद्धिकरण कर अपने ब्रांड के नाम से बेचती हैं।

किसान भाइयों, उपरोक्त इकाइयों को ग्रामीण स्तर पर संसाधनों एवं सुविधाओं के अनुसार स्थापित किया जा सकता है। खेत से बाजार की दूरी कम करके अधिकतम लाभ ग्रामीणों द्वारा ही लिया जा सकता है। साथ ही कच्चे माल के आवागमन पर होने वाले व्यय को घटाया जा सकता है।

इन कार्यों को यदि एफ.पी.ओ. (FPO) के माध्यम से किया जाए तो सफलता 100 प्रतिशत सुनिश्चित की जा सकती है। प्राथमिक और द्वितीयक प्रसंस्करण के द्वारा ही किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। अपने व्यवसाय को विभिन्न डिजिटल माध्यमों की मदद और लगन के साथ नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया जा सकता है।

बनखेड़ी में किसान विज्ञान मेला आयोजित

नर्मदापुरम । जिले के कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, बनखेड़ी में 10 मार्च 2026 को जिला स्तरीय कृषि विज्ञान मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आत्मा योजना के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें जिले के अलग-अलग विकासखंडों से आए किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस मेले में किसानों को उन्नत खेती, प्राकृतिक खेती और जैविक खेती से जुड़ी नई जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पिपरिया विधायक ठाकुरदास नागवंशी थे। कार्यक्रम में बनखेड़ी नगर पालिका अध्यक्ष हरीश मालानी, नवल रघुवंशी, सर्वज्ञ दीवान, भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास के उपाध्यक्ष उम्मेद सिंह पटेल, कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, उपसंचालक कृषि डॉ. रविकांत सिंह सहित कई अधिकारी, वैज्ञानिक और किसान उपस्थित रहे।

उपसंचालक कृषि डॉ. रविकांत सिंह ने किसानों को बताया कि इस मेले का उद्देश्य किसानों तक नई खेती की तकनीक पहुंचाना और उन्हें प्राकृतिक व जैविक खेती के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने किसानों से गेहूं की कटाई के बाद नरवाई नहीं जलाने की अपील की। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को कई महत्वपूर्ण जानकारी दी। डॉ. संजीव कुमार गर्ग ने प्राकृतिक खेती और नरवाई प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. दीपक खांडे ने ग्रीष्मकालीन फसलों की उन्नत खेती की तकनीक बताई और कीटनाशकों का सीमित उपयोग करने की सलाह दी। अन्य वैज्ञानिकों ने भी मूंग, उड़द और ग्रीष्मकालीन सब्जियों की खेती के बारे में जानकारी दी।

मेले में 30 से अधिक कृषि प्रदर्शनी स्टॉल लगाए गए, जहां किसानों को उन्नत बीज, कृषि उपकरण और नई तकनीकों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अंत में आत्मा योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट किसानों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। उप परियोजना संचालक गोविंद मीना ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ग्राम विशनपुरवा में कृषक दक्षता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

शहडोल । कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल और किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वावधान में 9 मार्च 2026 को गोहपारू विकासखंड के ग्राम विशनपुरवा में कृषक दक्षता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आसपास के कई किसान शामिल हुए और खेती से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने किसानों को बताया कि टिकाऊ खेती और खाद्य सुरक्षा के लिए दालों की फसल और अच्छी मिट्टी बहुत जरूरी है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि रबी फसलों की कटाई के बाद ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द की बुवाई करें। कार्यक्रम में आत्मा परियोजना से बीटीएम तारकेश्वर ने किसानों को मृदा परीक्षण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड के महत्व के बारे में जानकारी दी।

गैर-इमारती वनोपज से जुड़ेंगे स्वरोजगार के अवसर

धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की आर्या परियोजना के अंतर्गत ग्रामीण युवाओं के लिए आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। जिले के 25 युवा किसानों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर डॉ. एस.एस. चौहान, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, धार ने बताया कि आर्या परियोजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण युवाओं का कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की ओर रुझान बढ़ाना है। प्रशिक्षण के दौरान विशेषज्ञों ने युवाओं को अपनी लघु इकाइयां स्थापित करने और सरकारी योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया समझाई। डॉ. अंकिता पाण्डेय, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने प्रशिक्षण के मुख्य बिंदु और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पांच दिनों तक चले इस गहन प्रशिक्षण में युवाओं को महुआ, आंवला, पलाश, और अन्य वनोपजों के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन की उन्नत तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया गया। डॉ. डी.एस. मण्डलोई, तकनीकी अधिकारी ने बताया की इस प्रशिक्षण के दौरान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा युवाओं को यह सिखाया गया कि कैसे वे कच्चे वनोपज को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों में बदलकर बाजार में बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सभी प्रशिक्षणार्थियों को पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में रीतेश जैन, गौरव सारस्वत, भूपेन्द्र कुमार कुर्मी, गणेश निंगवाल, जितेन्द्र नायक, जीवन निंगवाल, विशेष नलवाया ने विशेष सहयोग दिया।

जनकृविवि के शोधार्थियों ने

एमपीसीएसटी यंग साइंटिस्ट अवार्ड में मारी बाजी

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के शोधार्थियों ने हाल ही में भोपाल में आयोजित मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) के 41वें यंग साइंटिस्ट अवार्ड में शानदार प्रदर्शन किया। देशभर से 700 से अधिक शोध पत्र आए थे, जिनमें से लगभग 270 शोधार्थियों के काम को चयनित किया गया।

इस प्रतियोगिता में कृषि विज्ञान (फार्म मशीनरी एवं पावर) में शालिनी चतुर्वेदी को प्रथम पुरस्कार (25,000) मिला। उनका पीएच.डी. शोध कार्य डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में हुआ। वहीं, मुस्कान जैन (एम.टेक., पोस्ट-हार्वेस्ट और फूड इंजीनियरिंग) को द्वितीय पुरस्कार (20,000) मिला, उनके शोध कार्य का निर्देशन डॉ. प्रीति जैन ने किया। तृतीय पुरस्कार (15,000) में डॉ. आयुषी सोनी (जेनेटिक्स एवं प्लांट ब्रीडिंग) और डॉ. निशी मिश्रा (जैव प्रौद्योगिकी विभाग) को सम्मानित किया गया।

कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने कहा कि यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर कृषि संकाय के अधिष्ठाता और अनुसंधान सेवाओं के संचालक डॉ. जी. के. कोतू, विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज श्रीवास्तव, डॉ. आशीष कुमार और डॉ. आर. शिवरामकृष्णन ने भी शोधार्थियों को बधाई दी।

किसानों ने केवीके टीकमगढ़ का किया शैक्षणिक भ्रमण

टीकमगढ़। बीसा परियोजना के अंतर्गत निवाड़ी जिले के पृथ्वीपुर ब्लॉक के गुरारा, बिरोरा और जेओरा गांवों के प्रगतिशील किसानों ने कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य किसानों को नई कृषि तकनीकों और खेती से जुड़े अतिरिक्त रोजगार के बारे में जानकारी देना था।

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वीरेंद्र सिंह किरार के मार्गदर्शन में वैज्ञानिक डॉ. सतेंद्र कुमार ने किसानों को केंद्र की विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का भ्रमण कराया। किसानों को क्रॉप कैफेटेरिया में रबी फसलों की उन्नत किस्मों की जानकारी दी गई। इसके अलावा मत्स्य पालन इकाई में वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन, बकरी पालन और मशरूम उत्पादन के बारे में बताया गया। उद्यानिकी इकाई में फलदार पौधों और सब्जी उत्पादन की आधुनिक विधियां भी दिखाई गईं। इस दौरान डॉ. एस.के. जाटव ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य और संतुलित उर्वरक उपयोग के बारे में जानकारी दी।

कृषि विज्ञान केन्द्र उज्जैन में मधुमक्खी पालन सेमिनार का आयोजन

उज्जैन । कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन में राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन मिशन के अंतर्गत मधुमक्खी पालन विषय पर सेमिनार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ए. के. दीक्षित ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने का सरल और लाभकारी साधन है तथा इससे सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलता है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला परियोजना प्रबंधक, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन उज्जैन अमित बृजवानी उपस्थित रहे। उन्होंने किसानों को मधुमक्खी पालन अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए इसे अच्छा स्वरोजगार बताया। विशिष्ट अतिथि संयुक्त संचालक उद्यानिकी उज्जैन संभाग आशीष कनेश ने विभाग की योजनाओं की जानकारी देकर किसानों को उनका लाभ लेने के लिए प्रेरित किया।

वैज्ञानिक डॉ. अशोक यादव ने मधुमक्खी पालन की वैज्ञानिक तकनीक, बक्सों के प्रबंधन, शहद उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सविता कुमारी ने बताया कि मधुमक्खियां फसलों में परागण बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाने में भी मदद करती हैं।कार्यक्रम में डॉ. एच. आर. जाटव ने शहद और अन्य उत्पादों की डिजिटल माध्यम से मार्केटिंग की जानकारी दी। प्रशिक्षण में डॉ. रेखा तिवारी, डॉ. आशीष बोबड़े और डॉ. मोनी सिंह ने भी सहयोग किया। इस प्रशिक्षण में लगभग 170 किसान और महिला किसानों ने भाग लिया। अंत में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

पिपरिया में चलेंगी नरवाई प्रबंधन पाठशालाएं

नर्मदापुरम। कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार पिपरिया में नरवाई प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण एवं बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) आकिप खान ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि गेहूं फसल की कटाई के बाद जलाए जाने वाली नरवाई पर सख्ती से कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि नरवाई जलाने की घटनाओं पर रोक लगाने के लिए ग्राम स्तर पर नरवाई प्रबंधन गश्ती दल का गठन किया जाएगा। यह दल गांवों में निगरानी करते हुए नरवाई जलाने की घटनाओं पर आवश्यक कार्यवाही करेगा। साथ ही आगामी 10 दिनों के भीतर नरवाई प्रबंधन पाठशालाओं का आयोजन कर किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के प्रति जागरूक किया जाएगा। किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में दीवार लेखन कराया जाए तथा वाहनों के माध्यम से मुनादी कर जानकारी दी जाए। ग्राम पंचायतों में नरवाई प्रबंधन से संबंधित कृषि यंत्रों के लिए कस्टम हायरिंग केंद्रों की सूची चस्पा की जाएगी तथा हार्वेस्टर संचालकों की सूची भी प्रदर्शित की जाएगी।

उज्जैन में संभागीय कार्यशाला आयोजित

उज्जैन। कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन द्वारा पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण विषय पर संभागीय स्तर की कार्यशाला एवं जागरूकता कार्यक्रम 9 मार्च 2026 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पोनकला पद्मावती, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद उपस्थित रहीं। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. कोमीरेड्डी परीमाला, प्रधान वैज्ञानिक एवं पौध प्रजनक (तेलंगाना) तथा डॉ. मुकेश सक्सैना, पौध प्रजनक, कृषि महाविद्यालय इंदौर शामिल हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्र उज्जैन के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ए.के. दीक्षित ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि किसानों को अपनी स्थानीय और पारंपरिक फसल किस्मों को पहचानकर उनका पंजीयन कराना चाहिए। इससे लुप्त होती देसी प्रजातियों का संरक्षण होगा और भविष्य की खेती के लिए भी यह उपयोगी साबित होंगी। कार्यक्रम में संभाग के विभिन्न जिलों से करीब 150 किसानों ने भाग लेकर जानकारी प्राप्त की।

जेएनकेवीवी में महिलाओं को आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी

जबलपुर । जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय था कृषि विस्तार प्रणाली के माध्यम से कृषि में कार्यरत महिलाओं के सशक्तिकरण की रणनीतियां।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, जबकि अध्यक्षता डॉ. टी. आर. शर्मा, संचालक विस्तार सेवाएं ने की।

कुलपति डॉ. मिश्रा ने कहा कि कृषि के विकास में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। गांवों में महिलाएं खेती, पशुपालन और घरेलू कामों में बराबर की भागीदारी निभाती हैं। यदि उन्हें नई कृषि तकनीक और प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे खेती को और अधिक लाभकारी बना सकती हैं। उन्होंने बताया कि कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) ग्रामीण महिलाओं तक नई तकनीक, प्रशिक्षण और सरकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने महिलाओं को कृषि से जुड़े नए अवसरों, कृषि आधारित छोटे-छोटे व्यवसाय, कौशल विकास और आधुनिक खेती की तकनीकों के बारे में जानकारी दी। साथ ही इस बात पर जोर दिया गया कि महिला किसानों को प्रशिक्षण देकर उनकी क्षमता बढ़ाई जाए, ताकि वे आर्थिक रूप से मजबूत बन सकें।

(पृष्ठ 6 का शेष)

परागणक कीटों ...

निवास का विनाश: खाद्य स्रोतों का विनाश, छत्ता बनाने या अंडे देने वाली जगह का विनाश, आराम करने वाले और संभोग स्थलों का विनाश परागणकों की आबादी को प्रभावित करता है । गहन कृषि पद्धतियों जैसे खरपतवार हटाना, कीटनाशकों का बार-बार उपयोग आदि के कारण परागणक कीटों की संख्या में गिरावट आती है। एकल फसल प्रणाली परागणक कीटों के भोजन के विकल्पों को कम कर देती हैं जो परागणक कीटों संख्या में गिरावट का प्रमुख कारण है।

बीमारी: मधुमक्खी में घटती जनसंख्या के लिए कॉलोनी पतन विकार अच्छी तरह से प्रलेखित है। मधुमक्खी के माईट की समस्या ने बड़ी चिंता पैदा कर दी है, क्योंकि श्वासनली माईट और वेरोआ माईट चिंताजनक दर से फैल रही हैं। अन्य फफूंदजनित, विषाणु तथा जीवाणु जनित बीमारियाँ भी मधुमक्खीयों की आबादी को भी प्रभावित कर रही हैं।

परस्पर पर प्रतियोगिता: अफ्रीकी मधुमक्खियों के आक्रमण के बाद देशी मधुमक्खियों की बहुतायत में कमी की ओर सबसे पहले राउबिक नामक वैज्ञानिक ने सन् 1978 में ध्यान आकर्षित कराया था। दक्षिण और मध्य अमेरिका में, देशी परागणकों के साथ अफ्रीकी मधुमक्खियों की प्रतिस्पर्धा ने देशी मधुमक्खियों की संख्या को प्रभावित किया है।

निष्कर्ष: कृषि और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता कीट परागणकों पर निर्भर करती है। फसलों और जंगली पौधों की आबादी में पर-परागण सुनिश्चित करने के लिए परागणक कीट आवश्यक हैं। वे पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में सीधे भाग लेते हैं। कीट परागणकों की कमी सीधे फसलों की उपज और जंगली पौधों की आबादी में विविधता को प्रभावित करती है। कीटनाशकों का अविवेकपूर्ण उपयोग, निवास स्थान का विनाश, बीमारी और विदेशी और स्वदेशी परागणकों के बीच प्रतिस्पर्धा, परागणकों की आबादी में गिरावट का प्रमुख कारण है। परागण करने वाले कीटों की आबादी में लगातार गिरावट से कृषि और पारिस्थितिकी को गंभीर नुकसान हो सकता है।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

देवास में

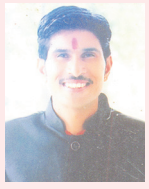

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

धर्मेन्द्र सिंह राजपूत
ईडब्ल्यूएस-2, चंद्रतारा लिंकसिटी, राजोदा रोड,
देवास (म.प्र.)
मो. 8839523598

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

रायपुर में आईएएस प्रशिक्षुओं ने देखा उन्नत कृषि अनुसंधान

रायपुर। हाल ही में आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान (एनआईबीएसएमए), रायपुर में सिविल सेवा प्रशिक्षु आईएएस (2024 बैच) अधिकारियों का शैक्षणिक भ्रमण हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षुओं ने संस्थान में फसलों में जैविक स्ट्रेस प्रबंधन के तहत किए जा रहे वैज्ञानिक अनुसंधान का अवलोकन किया। किसानों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि फसलों को प्रभावित करने वाले कीट, रोग और अन्य प्राकृतिक समस्याओं का समाधान किस प्रकार वैज्ञानिक तरीके से किया जा रहा है।

संस्थान के निदेशक ने प्रशिक्षुओं को संस्थान के मिशन, कार्यप्रणाली और अनुसंधान कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कीट और रोग फसलों की पैदावार घटा सकते हैं, इसलिए इनके प्रभावी और टिकाऊ प्रबंधन के लिए नए शोध किए जा रहे हैं। यह शोध सीधे तौर पर किसानों की फसल सुरक्षा और उत्पादन बढ़ाने में मदद करता है। साथ ही, संस्थान किसानों को सहयोग देने और कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों में सक्रिय योगदान दे रहा है।

संस्थान के संयुक्त निदेशक ने प्रशिक्षुओं को संस्थान में मौजूद अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं के बारे में बताया। इनमें केमिकल इकोलॉजी, टिश्यू कल्चर, एनालिटिकल और जीनोम एडिटिंग प्रयोगशालाएं, ग्लासहाउस और प्लांट ग्रोथ चैंबर शामिल हैं। प्रशिक्षुओं ने इन प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत कर शोध कार्यों की जानकारी ली। इस भ्रमण से आईएएस प्रशिक्षुओं को यह समझने का मौका मिला कि वैज्ञानिक अनुसंधान किसानों की फसलों को सुरक्षित रखने, उत्पादन बढ़ाने और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में कितना महत्वपूर्ण है। इस तरह के कार्यक्रम से न केवल अधिकारियों को नई तकनीक सीखने का अवसर मिलता है, बल्कि किसानों के लिए भी उन्नत कृषि पद्धतियों के महत्व को समझना आसान होता है।

महिला दिवस पर किसान महिलाओं को सम्मान

रायपुर। आईसीएआर-एनआईबीएसएमए रायपुर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 बड़े उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर किसानों की बेटियों, महिलाओं और महिला कर्मचारियों को उनके योगदान और मेहनत के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के अधिकार, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सशक्तिकरण के बारे में किसानों और कर्मचारियों को जानकारी देना था।

कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। सबसे पहले स्वागत उद्बोधन में बताया गया कि खेती, अनुसंधान और संस्थान की विकास गतिविधियों में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। इसके बाद महिलाओं की सुरक्षा और कार्यस्थल पर उत्पीड़न रोकने के लिए कानून और आंतरिक समिति की भूमिका पर जानकारी दी गई। महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता पर भी विशेष चर्चा हुई।

केवीके कांकेर में किसानों को कृषि उपकरण वितरित

रायपुर। कृषि विज्ञान केंद्र, कांकेर में आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, रायपुर के सहयोग से पौध किस्मों और किसान अधिकार संरक्षण अधिनियम 2001 पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को अपनी पारंपरिक और नई पौध किस्मों के संरक्षण तथा उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देना था।

प्रशिक्षण में मुख्य वक्ता के रूप में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के प्रोफेसर एवं पीपीवीएफआरए के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक शर्मा ने किसानों को पौध किस्मों के संरक्षण, किसानों के अधिकारों तथा नई और पारंपरिक किस्मों के पंजीकरण की पूरी प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने किसानों को आवेदन भरने की विधि भी समझाई।

इस अवसर पर आईजीकेवी के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट सदस्य रामस्वरूप उइके ने किसानों की पारंपरिक किस्मों को सुरक्षित रखने के महत्व पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीरबल साहू ने भी पौध किस्म संरक्षण की उपयोगिता पर जानकारी दी। किसानों को विषय से संबंधित शैक्षणिक वीडियो भी दिखाए गए।

कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा विभिन्न बीज, सब्जियों और फलों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें स्थानीय कृषि जैव विविधता को प्रदर्शित किया गया। ट्राइबल सब प्लान योजना के तहत आदिवासी किसानों को कृषि टूलकिट और स्प्रेयर भी वितरित किए गए।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत
मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म
कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755- 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम..
संस्था का नाम..
पूरा पता..
ग्राम..............................पोस्ट..............................तहसील ....
जिला..............................राज्य..............................पिन कोड
दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र '' कृषक दूत'' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)........................ (शब्दों में)..
बैंक का नाम.............................. ड्राफ्ट चेक क्रमांक..............................
दिनांक.............................. संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान.............................. प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील
दिनांक..............................

सरसों भी भावांतर में शामिल,सरकार खरीदेगी 100% तुअर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान से मुलाकात

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर राज्य के किसानों और ग्रामीण विकास से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। बैठक का सबसे बड़ा फैसला सरसों उत्पादक किसानों के हक में लिया गया है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश में सरसों की खरीद के लिए भावांतर भुगतान योजना के प्रस्ताव को अपनी मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही उन्होंने संबंधित विभागों को सख्त निर्देश दिए हैं कि किसानों के भुगतान की प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा किया जाए।

श्री चौहान ने बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. यादव को तुअर की शत-प्रतिशत सरकारी खरीद का स्वीकृति-पत्र भी सौंपा। इस निर्णय से मध्यप्रदेश के तुअर उत्पादक किसानों की उपज का पूर्ण सरकारी उपार्जन सुनिश्चित होगा। डॉ. यादव ने प्रदेश को दलहन और तिलहन उत्पादन का अग्रणी केंद्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस पर केंद्र और राज्य की संयुक्त टीम द्वारा मूंग, उड़द, चना, तिल, सरसों और पाम ऑयल जैसी फसलों के लिए दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने पर सहमति बनी।

डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसानों के हितों की बेहतर सुरक्षा का मुद्दा भी उठाया। श्री चौहान ने निर्देश दिए कि सोयाबीन जैसी फसलों के आंकलन में केवल सैटेलाइट डेटा के बजाय क्रॉप कटिंग और रिमोट सेंसिंग तरीकों का उपयोग किया जाए, जिससे किसानों को वास्तविक नुकसान के आधार पर मुआवजा मिल सके। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने बताया कि कृषि क्षेत्र को उन्नत बनाने के लिए निकट भविष्य में राज्यों के कृषि मंत्री मध्यप्रदेश में संयुक्त बैठक कर विचार-विमर्श करेंगे। बैठक में मध्यप्रदेश के लिए सरसों और सोयाबीन के भावांतर भुगतान, दलहन मिशन के तहत मूंग-उड़द के अतिरिक्त लक्ष्य, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता कार्यक्रम, मनरेगा मजदूरी और सामग्री भुगतान, प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से जुड़े मुद्दों पर बिंदुवार चर्चा की गई।

खेत और किसान की अच्छी सेहत जरूरी : श्री मंगुभाई पटेल

बीज एवं कृषि उपकरण वितरण कार्यक्रम

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए स्वास्थ्य और आधुनिक कृषि पद्धतियों की जागरूकता जरूरी है। विकास के लिए खेत और किसान की अच्छी सेहत होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसानों को आधुनिक कृषि संसाधनों से जोड़ना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है।

राज्यपाल श्री पटेल अनुसूचित जनजाति उपयोजना के अंतर्गत आयोजित राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया जागरूकता कार्यक्रम एवं कृषि उपकरण एवं बीज वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने इस अवसर पर 300 जनजातीय किसानों को 36 लाख रूपये से अधिक के कृषि उपकरण, बीज एवं प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के सूक्ष्म सिंचाई घटक के हितलाभ किसानों को प्रदान किए। उद्यानिकी विभाग द्वारा प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के अंतर्गत हितग्राहियों को अनुदान स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में किसानों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषि किट उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे किसानों को उत्पादकता और आय बढ़ाने में सहायता मिल रही है। श्री पटेल द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, आलीराजपुर में स्थापित एकीकृत कृषि प्रणाली इकाई एवं बीज गोदाम का झाबुआ से वर्चुअली लोकार्पण रिमोट का बटन दबाकर किया।

कृषि क्षेत्र में किये जा रहे तकनीकी नवाचार : राजस्व मंत्री श्री वर्मा

भोपाल। राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने कहा है कि प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाते हुए किसानों की आय वृद्धि, आधुनिक कृषि तकनीकों के विस्तार और पारदर्शी कृषि प्रबंधन की दिशा में लगातार कार्य किए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश ने कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को अपनाते हुए डिजिटल फसल सर्वेक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

डीसीएस के सटीक, पारदर्शी और प्रभावी क्रियान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए केंद्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश को 130 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है। श्री वर्मा ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा फसल सर्वेक्षण प्रणाली को आधुनिक, पारदर्शी और त्रुटिरहित बनाने के लिए जियो-फेंसिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सैटेलाइट डेटा जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का प्रभावी उपयोग किया जा रहा है। डिजिटल फसल सर्वेक्षण में जियो-फेंसिंग तकनीक के माध्यम से सर्वेक्षण का भौतिक सत्यापन सुनिश्चित किया गया है। इसके तहत सर्वेयर की खेत पर प्रत्यक्ष उपस्थिति अनिवार्य की गई है, जिससे बिना स्थल निरीक्षण के डेटा दर्ज नहीं किया जा सकेगा। श्री वर्मा ने कहा कि जमीनी स्तर पर एकत्रित डेटा का मिलान एआई/एमएल तकनीक और सैटेलाइट इमेजरी से किया जा रहा है। इससे सर्वेक्षण की सटीकता और विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है और मानवीय त्रुटियों की संभावना न्यूनतम हुई है।

निर्माणाधीन कार्य गुणवत्ता के साथ समयावधि में पूर्ण करने के निर्देश : मंत्री सिलावट

निर्माणाधीन वृहद एवं मध्यम परियोजनाओं की समीक्षा

भोपाल। जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने कहा है कि विभाग के अंतर्गत निर्माणाधीन कार्यों को पूर्ण गुणवत्ता के साथ नियत समय अवधि में पूर्ण करें, जिससे जनता को इन कार्यों का समय से पूरा लाभ मिल सके। कार्यों में किसी भी प्रकार की ढिलाई न बरती जाए। श्री सिलावट ने मंत्रालय में जल संसाधन विभाग के कार्यों की समीक्षा की। बैठक में अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा, प्रमुख अभियंता, विनोद कुमार देवड़ा, मुख्य अभियंता सहित विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कार्य से संबंधित निर्माण एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

श्री सिलावट द्वारा प्रमुख रूप से नर्मदा ताप्ती कछार इंदौर, जल संसाधन विभाग उज्जैन एवं नमामि क्षिप्रे परियोजना इकाई उज्जैन में निर्माणाधीन वृहद एवं मध्यम परियोजनाओं की समीक्षा की गई। उन्होंने उज्जैन एवं इंदौर कछार के अंतर्गत निर्माणाधीन 14 वृहद एवं मध्यम परियोजनाओं की समीक्षा की। परियोजनाओं के पूर्ण होने पर उज्जैन, देवास, मंदसौर, नीमच, शाजापुर, झाबुआ, बुरहानपुर एवं धार जिले को लगभग 5 लाख 44 हजार हेक्टेयर में अतिरिक्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने सभी परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण किये जाने, गुणवत्ता पूर्ण कार्य किये जाने के निर्देश दिये।

पैक्स से 10 लाख किसानों को जोड़ने चलेगा सदस्यता अभियान

श्री सारंग ने की सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक

भोपाल। सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश ने सहकारिता विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर विभाग की वर्तमान गतिविधियों एवं आगामी कार्ययोजना की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में श्री सारंग ने निर्देश दिए कि प्रदेश में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) और विपणन सहकारी समितियों के सुदृढ़ीकरण के लिए एक विशेष कमेटी गठित की जाए। यह कमेटी सहकारी संस्थाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन कर उनके संचालन, संरचना और कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने के संबंध में सुझाव देगी तथा 15 दिनों के भीतर अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

श्री सारंग ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को कृषि कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, ऐसे में सहकारिता क्षेत्र की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कृषि वर्ष को ध्यान में रखते हुए सहकारिता संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाए जाएं, ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसानों को सहकारिता से जोड़ने से ग्रामीण स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को गति मिलेगी और किसानों को संस्थागत सुविधाओं का लाभ प्राप्त होगा।

श्री सारंग ने खाद वितरण व्यवस्था की भी समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि डबल लॉक की स्थिति में नगद भुगतान के माध्यम से पैक्स के जरिए खाद वितरण की व्यवस्था को प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि इससे किसानों को समय पर खाद की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और वितरण व्यवस्था अधिक पारदर्शी और सुव्यवस्थित बन सकेगी। बैठक में प्रमुख सचिव सहकारिता डी.पी. आहूजा, आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

Hero
WORLD'S NUMBER 1
FOR 25 YEARS IN A ROW
Hero
5 करोड़~ सपनों की कहानी.
एक भरोसे की ज़ुबानी.
एक्स-शोरूम कीमत
₹80,964*
नया
Splendor+
XTEC 2.0
TOLL FREE NO.
1800-266-0018
सेगमेंट में पहली बार ऐसे फ़ीचर्स*
WORLD'S NO.1 MOTORCYCLE